मुहब्बत में नहीं है फ़र्क़ जीने और मरने का,
उसी को देखकर जीते हैं जिस काफ़िर पे दम निकले।

ग़ालिब

शायद इसी का नाम मुहब्बत है 'शेफ़्ता'
एक आग-सी है सीने के अन्दर लगी हुई।

शेफ़्ता

हम तौरे-इश्क़ से तो वाक़िफ़ नहीं हैं लेकिन
सीने में जैसे कोई दिल को मला करे है।

मीर

इश्क़ सुनते थे जिसे हम, वो यही है शायद,
ख़ुद-बख़ुद दिल में है इक शख़्स समाया जाता।

हाली

कभू रोना, कभू हँसना, कभू हैरान हो रहना,
मुहब्बत क्या भले-चंगे को दीवाना बनाती है।

मीर 'दर्द'

इस जज़्बए-उल्फ़त[1] का अदना ये फ़साना है,
सिमटे तो दिले-आशिक़, फैले तो ज़माना है।

जिगर

कुछ खेल नहीं है इश्क़ की लाग,
पानी न समझ, ये आग है आग।

अहमद अली 'शौक़'

इश्क़ से किसके दिल को लाग नहीं,
कौन सा घर है जिसमें आग नहीं ?

नासिख़

इश्क़ पर ज़ोर नहीं है ये वो आतश[2] 'ग़ालिब',
कि लगाये न लगे और बुझाये न बने।

ग़ालिब

अब ये जाना कि इसे कहते हैं आना दिल का,
हम हँसी-खेल ही समझे थे लगाना दिल का।

अमीर

क्या बुरी चीज़ है मुहब्बत भी,
बात करने में आँख भर आयी।

अज्ञात

बचता नहीं है जो कि है बीमार इश्क़ का,
यारब किसी को न हो ये आज़ार[3] इश्क़ का।

आशुफ़्ता

उल्फ़त का जब मज़ा है कि वो भी हों बेक़रार,
दोनों तरफ़ हो आग बराबर लगी हुई।

इस्माइल मेरठी

१. प्रेम की भावना २. आग ३. रोग

मुहब्बत रंग दे जाती है जब दिल दिल से मिलता है,
मगर मुश्किल तो ये है दिल बड़ी मुश्किल से मिलता है।

जलील

दवा हर दर्द की है, ऐ 'विलायत',
मगर दर्दे-मुहब्बत ला-दवा है।

'विलायत' गोरखपुरी

उल्टी हो गयीं सब तदबीरें कुछ न दवा ने काम किया,
देखा, इस बीमारिए-इश्क़ ने आखिर काम तमाम किया।

मीर

मुहब्बत मानिश्रो-अलफ़ाज[1] में लायी नहीं जाती,
ये वो नाज़ुक हक़ीक़त है जो समझायी नहीं जाती।

'शेरी' भोपाली

आतिशे-इश्क़[2] भड़कती है हवा से पहले,
होंठ जलते हैं मुहब्बत में दुआ से पहले।

फ़िराक़

लाख चाहत को छिपाये कोई पर छिपती नहीं,
प्यार की आँख और उल्फ़त की नज़र छिपती नहीं।

ज़फ़र

तुमको हज़ार शर्म सही, मुझको लाख ज़ब्त,
उल्फ़त वो राज़ है कि छिपाया न जायेगा।

हाली

तर देख के मेरी आँखों को, ये बात सुनाता है अक्सर,
हैं कहते जिसको चाह मियाँ, वो मुश्किल है आसान नहीं।

'नज़ीर' अकबराबादी

---

१. शब्द और अर्थ   २. प्रेम की आग

ये इश्क़ नहीं आसाँ, इतना ही समझ लीजे,
एक आग का दरिया है और डूब के जाना है।

जिगर

क्या खबर थी इसमें काँटों के सिवा कुछ भी नहीं,
इस मुहब्बत को बहारे-बेखिज़ाँ[1] समझा था मैं।

त्रिभुवननाथ 'आग़ा'

सहल है मिलना निगाहों का मगर
दिल से दिल मिलना बहुत दुश्वार है।

अमीर

पहले से अगर जानते अंजामे-मुहब्बत,[2]
लेते न कभी भूल के हम नामे-मुहब्बत।

ज़ौक़

काबा भी हम गये, न गया पर बुतों का इश्क़,
इस दर्द को ख़ुदा के भी घर में दवा नहीं।

यक़ीन

अनोखी वज़ा है, सारे ज़माने से निराले हैं,
ये आशिक़ कौन-सी बस्ती के यारब रहने वाले हैं।

इक़बाल

'क़ायम' आता है मुझे रहम जवानी पे तेरी
मर चुके हैं इसी आज़ार में बीमार बहुत।

क़ायम

आग़ाज़े-आशिक़ी में कलेजा धड़क गया
सर फोड़ने से पहले ही माथा ठनक गया

अज्ञात

---

१. जिस वसंत में कभी पतझड़ न आये   २. प्रेम का परिणाम

न आया हमें इश्क़ करना न आया,
मरे उम्र भर और मरना न आया।

रियाज़

इश्क़ में दिल गँवा के हाल ये है,
कुछ मैं खोया हुआ सा रहता हूँ।

'साक़िब' लखनवी

ज़िंदगी है तमाम सोज़ो-गुदाज़[१]
ऐ ग़मे-इश्क़, तेरी उम्र दराज़[२]।

'निश्तर' हथगामी

कौन कहता है चाह मुश्किल है,
लेकिन इसका निबाह मुश्किल है।

बयाँ

मैं भी कुछ ख़ुश नहीं वफ़ा करके,
तुमने अच्छा किया निबाह न की।

मोमिन

लोग कहते हैं मुहब्बत में असर होता है,
कौन से शहर में होता है, कहाँ होता है?

जुरअत

मैं क्या कहूँ कहाँ है मुहब्बत, कहाँ नहीं;
रग-रग में दौड़ी फिरती है निश्तर[३] लिये हुए।

असग़र

ख़्वारियाँ, बदनामियाँ, रुस्वाइयाँ,[४]
इश्क़ ने शक्लें ये सब दिखलाइयाँ।

मुसहफ़ी

---

१. जलन और कोमलता २. लम्बी ३. चीरा लगाने का चाकू
४. बेइज़्ज़ती

आग थे इब्तिदाए-इश्क़[१] में हम,
अब जो हैं ख़ाक इन्तिहा[२] है ये।

मीर

दिल सरापा[३] दर्द था, वो इब्तिदाए-इश्क़ थी,
इन्तिहा ये है कि 'फ़ानी' दर्द अब दिल हो गया।

फ़ानी

जज़्बए-इश्क़ सलामत है तो इंशा अल्लाह,
कच्चे धागे में चले आयेंगे सरकार बँधे।

दाग़

उल्फ़त का नशा जब कोई मर जाये तो जाये,
ये दर्दे-सर ऐसा है कि सर जाये तो जाये।

ज़ौक़

लाख नाज़ुक हो रिश्तए-उल्फ़त,
टूटता है ये तार मुश्किल से।

जलील

अजब अहवाल[४] है 'ताबाँ' का तेरे,
कि रोना रात-दिन और कुछ न कहना।

ताबाँ

रोये है बात-बात पर 'जुरअत'
ये गिरफ़्तार है कहीं न कहीं।

जुरअत

दीवानगिए-इश्क़ बुरी चीज़ है 'आतश'
ये उसका काम है जिसे दीवाना बना दे।

आतश

---

१. प्रेम का आरम्भ २. परिणाम, अन्त ३. सर से पैर तक साकार
४. हाल

हमनशीनो,[1] कुछ न पूछो हाले दिल
एक शीशा है कि चकनाचूर है।

'मुज़्तर' शाहजहाँपुरी

तू बचा-बचा के न रख इसे, तेरा आईना है वो आईना
कि शिकस्ता[2] हो तो अज़ीज़तर[3] है निगाहे आईनासाज़[4] में।

इक़बाल

खेल समझो न दिल्लगी दिल की
खूं रुलाएगी ये लगी दिल की।

जिगर

जिन-जिन को था ये इश्क़ का आज़ार मर गये,
अक्सर हमारे साथ के बीमार मर गये।

मीर

मेरी उनकी निभी निभी न निभी,
दिल ही तो है मिला मिला न मिला।

हमीद

हमने पाला मुद्दतों पहलू में, हम कुछ भी नहीं
तुमने देखा इक नज़र और दिल तुम्हारा हो गया।

'आसी' रामनगरी

समझता हूँ सब कुछ मगर, दोस्तो,
ये दिल है जिधर आ गया, आ गया।

दाग़

इक झलक उनकी देख ली थी कभी,
वो असर दिल से आज तक न गया।

'अकबर' इलाहाबादी

१. साथ बैठने वाली, साथियो २. टूटा हुआ ३. अधिक प्रिय
४. आईना बनाने वाले की दृष्टि

दिल का क्या मोल है ?—शर्मिन्दा न कीजे मुझको;
आपकी चीज़ है ले जाइये, क़ीमत कैसी।

तालिब

शीशए-दिल को यूं न उठाओ,
देखो हाथ से छूटा होता।

अज़ीज़

इश्क़ बुरे ही खयाल पड़ा है, चैन गया, आराम गया ;
जी का जाना ठहर गया है, सुब्ह गया या शाम गया।

मीर

मुफ़्त सौदा है अरे यार कहाँ जाता है ?
आ मेरे दिल के ख़रीदार कहाँ जाता है ?

फ़ुग़ाँ

दिल ही तो है न संगो-ख़िश्त[1] दर्द से भर न आये क्यों,
रोयेंगे हम हज़ार बार कोई हमें रुलाये क्यों।

ग़ालिब

दिल उस बुत पे शैदा हुआ चाहता है,
ख़ुदा जाने अब क्या हुआ चाहता है।

अज्ञात

दिल भी तेरा ही ढंग सीखा है,
आन में कुछ है, आन में कुछ है।

मीर 'दर्द'

और क्या देखने को बाक़ी है,
आप से दिल लगा के देख लिया।

फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'

१. ईट और पत्थर

इब्तिदाए-इश्क़ है रोता है क्या,
आगे-आगे देखिये होता है क्या।

मीर

निगाहें मेरी उनकी मिल गयी थीं रात महफ़िल में;
ये दुनिया है, बस इतनी बात फैली दास्ताँ होकर।

'अकबर' इलाहाबादी

देखा न ज़माने में 'मज्ज़ूब'[1] सा दीवाना;
फ़र्ज़ाना[2] का फ़र्ज़ाना, दीवाना का दीवाना।

मज्ज़ूब

'फ़ानी' को या जुनूँ है या तेरी आरज़ू है;
कल नाम लेके तेरा दीवानावार रोया।

फ़ानी

मार्का[3] है आज हुस्नो-इश्क़ का
देखिये वो क्या करें, हम क्या करें।

दाग़

यूँ तो हर गुंचए-गुल[4] शक्ले-सनोबर है 'अमीर'
जिससे कुछ दर्द की बू आये, उसे दिल समझें।

अमीर

किसी ने मोल न पूछा दिले-शिकस्ता का,
कोई खरीद के टूटा पियाला क्या करता।

आतश

शाम ही से बुझा सा रहता है
दिल हुआ है चराग़ मुफ़लिस का।

मीर

---

१. वह फ़कीर जो देखने में दीवाना हो, पर अक़्लमन्द हो २. बुद्धिमान् ३. टक्कर ४. फूल की कली

दिल के आईने में है तस्वीरे-यार;
जब ज़रा गर्दन झुकायी, देख ली।

अज्ञात

इलाही कैसी-कैसी सूरतें तूने बनायी हैं,
कि हर सूरत कलेजे से लगा लेने के क़ाबिल है।

'अकबर' इलाहाबादी

जज़्बे-हुस्ने-यार[1] का हम ये असर देखा किये,
शौक़ उतना ही बढ़ा जितना उधर देखा किये।

खलीक़

जुनूँ[2] का नाम ख़िरद[3] पड़ गया, ख़िरद का जुनूँ,
जो चाहे आपका हुस्ने-करिश्मासाज़[4] करे।

हसरत

वो क्या कुछ नहीं हुस्न के शह्र में
नहीं है तो रस्मे-वफ़ा ही नहीं।

मीर

तकल्लुफ़[5] से बरी[6] है हुस्ने-ज़ाती,
क़बाए-गुल[7] में गुल-बूटा कहाँ।

आतश

किस दर्जा तंग हूँ तेरे हाथों से, ऐ जुनूँ,
लाऊँ कहाँ से रोज़ गरीबाँ नए-नए।

रिंद

मुहब्बत हो किसी की या अदावत,[8]
मज़ा दे जायेगी जो दिल से होगी।

'नसीम' देहलवी

---

१. प्रेयसी के रूप का आकर्षण २. पागलपन ३. बुद्धि ४. चमत्कार करने वाली सुन्दरता ५. सजावट ६. मुक्त ७. फूल का वस्त्र ८. दुश्मनी

क़दम डगमगाये, नज़र बहकी-बहकी
जवानी का आलम है, सरशारियाँ[1] हैं।

जिगर

ये सूरत और भोली-भोली बातें;
तुम्हीं बतलाओ प्यार आये न आये।

अंजुम

क्यों सादगी में तौर कुछ अब बाँकपन के हैं
कल तक तो बाँकपन में अदा सादगी की थी।

फ़ानी

समझे थे हम तो 'मीर' को आशिक़ उसी घड़ी
जब तेरा नाम सुनके वो बेताब सा हुआ।

मीर

बुत को बुत और ख़ुदा को ख़ुदा कहते हैं
हम भी देखें कि तुझे देख के क्या कहते हैं।

दाग़

कभी कुछ रात गये, और कभी कुछ रात रहे
हमने इन पर्दानशीनों को निकलते देखा।

रियाज़

फ़र्क़ क्या आशिक़ो-माशूक़ में इतना ही तो है
कोई दीवाना बनाये, कोई दीवाना बने।

'सफ़दर' मिर्ज़ापुरी

एक जल्वए-हक़नुमा[2] को देखा,
तुमको देखा ख़ुदा को देखा।

फ़िराक़

वो क्या जाने कहते हैं किसको जवानी
अभी खेलता है लड़कपन किसी का।

अमीर

बात करनी तक न तुमको आती थी
ये हमारे सामने की बात है।

दाग़

ये रंग गुलाब की कली का
नक़्शा है किसी की कमसिनी[1] का।

जलील

जवानी से तिफ़्ली[2] गले मिल रही थी;
हवा चल रही थी, कली खिल रही थी।

मजाज़

तमाम शबनमो-गुल[3] है वो सर से ता-ब-क़दम
रुके-रुके से कुछ आँसू, रुकी-रुकी सी हँसी।

फ़िराक़

ख़ुदा की शान, जिन्हें बात कर न आती थी।
वो अब करे हैं सवालो-जवाब आँखों में।

नज़ीर

हर अदा मस्ताना सर से पाँव तक छाई हुई,
उफ़ तेरी काफ़िर जवानी जोश पर आयी हुई।

दाग़

फिरते हो 'मीर' साहब सबसे जुदे-जुदे तुम
शायद कहीं तुम्हारा दिल इन दिनों लगा है।

मीर

आज 'अरशद' को अजब हाल में हमने देखा,
रो रहा था किसी शख्स की दीवार के पास।

अरशद

होगा किसी दीवार के साए के तले 'मीर',
क्या काम मुहब्बत से उस आरामतलब को ?

मीर

आह क्यों बार-बार करता है,
सच बता किसको प्यार करता है ?

अज्ञात

समझा था, न समझा है, न समझेगा 'रज़ा' कुछ,
दीवाना था, दीवाना है, दीवाना रहेगा।

'रज़ा' लखनवी

तड़पती देखता हूँ जब कोई शै,[1]
उठा लेता हूँ अपना दिल समझकर।

तस्लीम

चैन मिलता नहीं ज़रा दिल को,
तुमसे मिलकर ये क्या हुआ दिल को।

निज़ाम

दुनिया में फिर वो काम के क़ाबिल नहीं रहा,
जिस दिल को तुमने देख लिया, दिल नहीं रहा।

ज़ामिन

यूँ तो दिल को कभी क़रार[2] न था,
अब बहुत बेक़रार रहता है।

'मुज़्तर' खैराबादी

---

१. चीज़ २. चैन

दिल की हालत नहीं बदलने की;
अब ये दुनिया नहीं सँभलने की।

मुंशी नौबतराय 'नज़र'

दिल मुझे उस गली में ले जाकर
और भी ख़ाक में मिला लाया।

मीर

बहुत है जम[1] को अपने जाम पर नाज़
ज़रा लाना मेरा टूटा हुआ दिल।

रियाज़

ऐ मेरे दर्दमंद दिल, सुन मेरी एक बात सुन
उसको न भूलना कभी जिसने तुझे भुला दिया।

'आसी' आलदनी

दिल ने मुझसे 'असर' किया सो किया
क्या कहूँ, मेहरबान है अपना।

'असर' लखनवी

तू भोला-भाला है, ऐ दिल, बेतरह सताया जायेगा
इन शोख़ हसीनों से मिलकर वल्लाह बहुत पछतायेगा।

'बेदम' शाह वारसी

आगे शायद पड़ता है अदम,[2] कुछ ठीक हमें मालूम नहीं;
दर्द की हद है 'फ़िराक़' यहीं से दिल की नगरी छूट गई।

फ़िराक़

एक दिल है और तूफ़ाने-हवादिस,[3] ऐ 'जिगर',
एक शीशा है कि हर पत्थर से टकराता हूँ मैं।

जिगर

---

१. ईरान का बादशाह जमशेद, जिसके पास शराब पीने का एक ऐसा प्याला था जिसमें उसे सारी दुनिया का हाल दिखाई देता था।
२. परलोक ३. विपदाओं का तूफ़ान (हवादिस-'हादिसा' का बहुवचन)

क़दम डगमगाये, नज़र बहकी-बहकी
जवानी का आलम है, सरशारियाँ[1] हैं।

जिगर

ये सूरत और भोली-भोली बातें;
तुम्हीं बतलाओ प्यार आये न आये।

अंजुम

क्यों सादगी में तौर कुछ अब बाँकपन के हैं
कल तक तो बाँकपन में अदा सादगी की थी।

फ़ानी

समझे थे हम तो 'मीर' को आशिक़ उसी घड़ी
जब तेरा नाम सुनके वो बेताब सा हुआ।

मीर

बुत को बुत और ख़ुदा को ख़ुदा कहते हैं
हम भी देखें कि तुझे देख के क्या कहते हैं।

दाग़

कभी कुछ रात गये, और कभी कुछ रात रहे
हमने इन पर्दानशीनों को निकलते देखा।

रियाज

फ़र्क़ क्या आशिक़ो-माशूक़ में इतना ही तो है
कोई दीवाना बनाये, कोई दीवाना बने।

'सफ़दर' मिर्ज़ापुरी

एक जल्वए-हक़नुमा[2] को देखा,
तुमको देखा ख़ुदा को देखा।

फ़िराक़

१. मस्तियाँ २. सत्य (ईश्वर) के दर्शन कराने वाला जलवा (दृश्य)

वो क्या जाने कहते हैं किसको जवानी
अभी खेलता है लड़कपन किसी का।

अमीर

बात करनी तक न तुमको आती थी
ये हमारे सामने की बात है।

दाग़

ये रंग गुलाब की कली का
नक़्शा है किसी की कमसिनी[1] का।

जलील

जवानी से तिफ़्ली[2] गले मिल रही थी;
हवा चल रही थी, कली खिल रही थी।

मजाज़

तमाम शबनमो-गुल[3] है वो सर से ता-ब-क़दम
रुके-रुके से कुछ आँसू, रुकी-रुकी सी हँसी।

फ़िराक़

ख़ुदा की शान, जिन्हें बात कर न आती थी।
वो अब करे हैं सवालो-जवाब आँखों में।

नज़ीर

हर अदा मस्ताना सर से पाँव तक छाई हुई,
उफ़ तेरी काफ़िर जवानी जोश पर आयी हुई।

दाग़

फिरते हो 'मीर' साहब सबसे जुदे-जुदे तुम
शायद कहीं तुम्हारा दिल इन दिनों लगा है।

मीर

१. कम उम्र २. बचपन ३. ओस और फूल

रात भी, नींद भी, कहानी भी;
हाय क्या चीज़ है जवानी भी।

फ़िराक़

तुंद[1] मै[2] और ऐसे कमसिन के लिए,
साक़िया हल्की सी ला इनके लिए।

अमीर

बदमस्तियों का रंग है जोशे-शबाब[3] में
गोया कि वो नहाये हुए हैं शराब में।

अनवर

कुछ निराला है जवानी का बनाव,
शोख़ियाँ ज़ेवर हैं इस सिन के लिए।

दाग़

नाहक हम मजबूरों पर ये तुहमत है मुख़्तारी की,
चाहते हैं सो आप करे हैं, हमको अबस[4] बदनाम किया।

मीर

जो उठे तो सीना उभार के, जो चले तो ठोकरें मार के,
बस आप एक जवान हैं, क्या और कोई जवाँ नहीं ?

अज्ञात

वो कुछ मुस्कराना वो कुछ झेंप जाना
जवानी अदाएँ सिखाती है क्या-क्या।

'बेख़ुद' देहलवी

ये नाज़, ये ग़ुरूर लड़कपन में तो न था;
अब तुम जवान होके बड़े आदमी हुए।

इबरत

---

१. तेज़ २. शराब ३. जवानी का जोश ४. व्यर्थ

ज़िक्र जब छिड़ गया क़यामत[1] का
बात पहुँची तेरी जवानी तक।

फ़ानी

वो लड़कपन के थे दिन और ये जवानी की बहार,
पहले भी रुख़ पर तेरे तिल था मगर क़ातिल न था।

माजिद

इधर आँख झपकी उधर ढल गयी वो,
जवानी भी थी एक धूप दो पहर की।

अज्ञात

बरस पन्द्रह या कि सोलह का सिन,
जवानी की रातें उमंगों के दिन।

मीर 'हसन'

बाग़बाँ कलियाँ हों हल्के रंग की,
भेजनी हैं एक कमसिन के लिए।

अमीर

शबाब आया है, पैदा रंग है रुख़सारे-जानाँ[2] पर,
फ़रोग़े-हुस्न[3] कहता है सहर होती है गुलशन में।

चकबस्त

जवानी आयी और यूँ दबे पाँव आयी
कि जैसे हुस्न को ख़ुद अपनी याद आ जाये।

फ़िराक़

झूमता आज मेरा मस्ते-शबाब[4] आता है,
कोई देखे तो कहे पी के शराब आता है।

जलील

---

१. प्रलय २. प्रेमिका के गाल ३. रूप का निखार
४. जो जवानी के नशे में चूर हो

आँचल ढला रहे मेरे मस्ते-शबाब का,
ओढ़ा गया कभी न दुपट्टा सँभाल के।

रियाज़

नशाए-हुस्न को इस तरह उतरते देखा
ऐब पर अपने कोई जैसे पशीमाँ हो जाये।

मिर्ज़ा 'यास' यगाना चंगेज़ी

बाक़ी न दिल में कोई भी, यारब, हवस रहे;
चौदह बरस के सिन में वो लाखों बरस रहे।

अमीर

बशर[1] इसके हाथों से मजबूर है
जवानी दीवानी है, मशहूर है।

अज्ञात

मस्त आँख, बल खाई ज़ुल्फ़ें और वो रुखसारों के गुलाब;
अल्हड़ चाल लहकता पैकर[2] जिस पे फटा पड़ता है शबाब।

फ़िराक़

पसन्द आये तो ले लो दिल हमारा,
मगर दिल फिर भी किस क़ाबिल हमारा।

'आसी' रामनगरी

पहली नज़र भी आपकी उफ़ किस बला की थी,
हम आज तक हैं चोट वो दिल पर लिये हुए।

असग़र

वो गलियाँ अभी तक हसीनो-जवाँ हैं,
जहाँ मैंने अपनी जवानी लुटा दी।

साग़र

१. इन्सान २. शरीर

इसी दिन को तो क़त्ले-आशिक़ाँ से मना करते थे
अकेले फिर रहे हो यूसुफ़े-बेकारवाँ[1] होकर।

वज़ीर

कूचे में उश्शाक़[2] बहुत आये हुए हैं,
वो ख़ौफ़ से बदनामी के घबराये हुए हैं।

मुश्तरी

किस सोच में हैं आईने को आप देखकर,
मेरी तरफ़ तो देखिये, सरकार, क्या हुआ?

अनवर

मेरे ग़म ने होश उनके भी खो दिये,
वो समझाते-समझाते खुद रो दिये।

'आरज़ू' लखनवी

करवटें क्यों बदल रहे हैं, हुज़ूर,
अभी आग़ाज़[3] है कहानी का।

'असर' लखनवी

मसायब[4] और थे पर दिल का जाना,
अजब एक सानिहा[5] सा हो गया है।

मीर

वो तेरी दोशीज़ा[6] निगाहें दिल नहीं भूला,
पड़ी जब-जब नज़र, तेरी निगाहे-अव्वली[7] निकली।

फ़िराक़

सहमी हुई थी सुब्ह की पहली किरन की तरह,
उनकी तरफ़ निगाह जो पहले-पहल गयी।

'असर' लखनवी

१. कारवाँ से बिछड़े हुए यूसुफ़ २. आशिक़ का बहुवचन
३. आरम्भ ४. मुसीबतें ५. दुर्घटना ६. कुँआरी ७. पहली नज़र

ख़ुदा महफ़ूज़ रक्खे इश्क़ के जज़्बाते-कामिल[1] से,
ज़मीं गर्दूं[2] से टकरायी जहाँ दिल मिल गया दिल से।

अज़ीज़

दिल के टुकड़ों को बग़ल बीच लिये फिरता हूँ,
कुछ इलाज इसका भी, ऐ शीशगराँ[3], है कि नहीं?

सौदा

दिले-पुरखूं[4] की एक गुलाबी[5] से,
उम्र भर हम रहे शराबी से।

मीर

ये शबाब के फ़साने जो मैं दिल से सुन रहा हूँ,
अगर और कोई कहता तो न एतबार होता।

साक़िब

निगह निकली न दिल की चोर ज़ुल्फ़े-अम्बरी[6] निकली;
इधर ला हाथ, मुट्ठी खोल, ये चोरी यहीं निकली।

दाग़

जब चमन में जा के प्यारे, तुमने ज़ुल्फ़ें खोलियाँ,
ले गयी बादे-सबा[7] ख़ुशबू की भर-भर झोलियाँ।

आबरू

नींद उसकी है, दिमाग़ उसका है, रातें उसकी हैं,
जिसके शाने[8] पर तेरी ज़ुल्फ़ें परीशाँ हो गयीं।

ग़ालिब

न कुछ तेज़ी चली बादे-सबा की,
बिगड़ने में भी ज़ुल्फ़ उनकी बना की।

मोमिन

---

१. भरपूर भावनाएँ २. आसमान ३. शीशा बनाने वाले
४. ख़ून से भरा हुआ दिल ५. शराब ६. सुगन्धित बाल
७. मलयानिल, सुबह की हवा ८. कन्धे

हम हुए, तुम हुए कि 'मीर' हुए;
उसकी ज़ुल्फ़ों के सब असीर हुए।

मीर

मुअत्तर[1] है उसी कूचे की सूरत अपना सहरा[2] भी,
कहाँ खोले हैं गेसू[3] यार ने, ख़ुशबू कहाँ तक है।

वहीद

किसने भीगे हुए बालों से ये झटका पानी,
झूमकर आयी घटा, टूट के बरसा पानी।

'आरज़ू' लखनवी

ज़ुल्फ़ों वाले ये अन्धेर
दुहरे-दुहरे काले नाग

'आज़ाद' अंसारी

उधर बालों में कंघी हो रही है, ख़म[4] निकलता है,
इधर रग-रग से खिंच-खिंचकर हमारा दम निकलता है।

'शाद' अज़ीमाबादी

सरापे में जिस जा नज़र कीजिये,
वहीं उम्र अपनी बसर कीजिये।

मीर

सितारे जागते हैं, रात लट छिटकाये सोती है,
दबे पाँवों ये किसने आके ख़्वाबे-ज़िन्दगी बदला।

फ़िराक़

रगों में दौड़ने-फिरने के हम नहीं क़ायल;
जब आँख ही से न टपके तो फिर लहू क्या है!

ग़ालिब

---

१. सुगन्धित २. निर्जन स्थान ३. बाल ४. टेढ़ापन, घूंघर।

अबके जुनूँ में फ़ासिला शायद न कुछ रहे
दामन के चाक और गरीबाँ के चाक में।

मीर

ख़्वाब में देखा था मैं भी उसका दामाँ हाथ में,
खुल गयी जो आँख तो पाया गरीबाँ हाथ में।

मुसहफ़ी

सौ बार तेरा दामन हाथों में मेरे आया,
जब आँख खुली देखा अपना ही गरीबाँ था।

असग़र

सज गर्म, जबीं[1] गर्म, निगह गर्म, अदा गर्म,
वो सर से है ता-नाख़ुने-पा[2], नामे-ख़ुदा, गर्म।

इंशा

तुम कि बैठे पे एक आफ़त हो,
उठ खड़े हो तो क्या क़यामत हो।

हातिम

भरम खुल जाए ज़ालिम तेरे क़ामत[3] की दराज़ी[4] का,
अगर इस तुर्रए-पुरपेचो-ख़म[5] का पेचो-ख़म निकले।

ग़ालिब

देख लो मेरे प्यार की सूरत
है सरापा बहार की सूरत।

ताबाँ

पहले सौ बार इधर-उधर देखा,
जब तुझे डर के एक नज़र देखा।

मीर 'असर'

---

१. माथा   २. पैर के नाख़ून तक   ३. क़द   ४. लम्बाई
५. घुँघराले बालों की लट

'मीर' उन नीमबाज़[1] आँखों में,
सारी मस्ती शराब की सी है।

मीर

जिसको तेरी आँखों से सरोकार रहेगा,
बिलफ़र्ज़[2] जिया भी तो वो बीमार रहेगा।

मुहब्बत

जिधर देखे उधर वो सफ़[3] की सफ़ उलट दे है,
भरी है शोख़ के ऐसी शराब आँखों में।

'नज़ीर' अकबराबादी

दिल थामता कि चश्म[4] पे करता मैं निगाह,
साग़र को देखता कि मैं शीशा[5] सँभालता।

फ़िराक़

सामने चश्मे-मस्ते-साक़ी के
किसको पर्वाए-जाम होती है।

ज़फ़र

हाय वो मस्ती-भरी साक़ी की आँख,
हाय वो जल्वे छलकते जाम के।

वफ़ा

उस घड़ी देखो उनका आलम नींद से जब हों भारी आँखें।
कौन 'असर' की नज़र में समाये, देखी हैं उसने तुम्हारी आँखें।

'असर' लखनवी

तेरी आँखों का कुछ क़ुसूर नहीं
हाँ, मुझी को ख़राब होना था।

जिगर

---

१. अधखुली   २. मान लो   ३. पाँत   ४. आँख   ५. शराब की बोतल

आँख जिस जानिब[1] तुम्हारी उठ गयी,
रह गये लाखों कलेजा थाम के।

दाग़

हमने देखी है किसी शोख़ की मस्ती-भरी आँख,
मिलती-जुलती है छलकते हुए पैमाने से।

फ़ानी

खिलना कम-कम कली ने सीखा है,
उसकी आँखों की नीमख़ाबी[2] से।

मीर

मस्त आँखें उधर तेरी, लबरेज़[3] इधर साग़र
लड़ जाये न ऐ साक़ी, पैमाने से पैमाना।

'जिगर' बिस्वानी

वो आँख ज़बान हो गयी है, हर बज़्म की जान हो गयी है,
पहले वो निगाह एक किरन थी, अब एक जहान हो गयी है।

फ़िराक़

मुरव्वत भी हो तेरी आँख में काश,
रसीली है, कटीली है, बड़ी है।

दाग़

बिजलियाँ टूट पड़ीं जब वो मुक़ाबिल से उठा,
मिल के पलटी थीं निगाहें कि धुआँ दिल से उठा।

फ़ानी

कैफ़िय्यते-चश्म[4] उसकी मुझे याद है 'सौदा',
साग़र को मेरे हाथ से लेना कि चला मैं।

सौदा

१. तरफ़ २. उनींदापन ३. मुँह तक भरा हुआ ४. आँख का गुण

हमारी तरफ़ अब वो कम देखते हैं,
वो नज़रें नहीं जिनको हम देखते हैं।

दाग़

नहीं उठती हैं अव्वल तो निगाहें सुब्ह को उनकी
मगर उट्ठीं, तो फिर उठती हैं वो एक दास्ताँ होकर।

अज्ञात

निगह की बर्छियाँ जो सह सके, सीना उसी का है,
हमारा-आपका जीना नहीं जीना, उसी का है।

'शाद' अज़ीमाबादी

उम्मीदवार हैं हर सिम्त आशिक़ों के गरोह,
तेरी निगाह को अल्लाह दिलनवाज़[1] करे।

हसरत

दिल के आईने में इस तरह उतरती है निगाह
जैसे पानी में लचक जाये किरन, क्या कहना!

फ़िराक़

झुकती है निगाह उसकी मुझसे मिलकर,
दीवार से धूप उतर रही है गोया।

'जोश' मलीहाबादी

रात उसकी चश्मे-मैगूँ[2] ख़्वाब में देखी थी मैं,
सुब्ह सोते से उठा तो सामने पैमाना था।

मीर

बहुत दिनों में तग़ाफ़ुल[3] ने तेरे पैदा की,
वो एक निगाह जो बज़ाहिर निगाह से कम है।

ग़ालिब

१. दिल को तसल्ली देने वाली २. शराबी आँख ३. उपेक्षा

अजीब हुस्न है उन सुर्ख़-सुर्ख़ गालों में
मए-दोआतशा[1] भर दी है दो पियालों में।

जलील

नाज़ुकी उसके लब की क्या कहिये
पंखड़ी एक गुलाब की सी है।

मीर

कितने शीरीं[2] हैं तेरे लब कि रक़ीब,
गालियाँ खा के बदमज़ा न हुआ।

ग़ालिब

तुम्हारे लब हैं बाग़े-हुस्न के फूल,
तबस्सुम[3] उनकी नाज़ुक पंखड़ी है।

अमीर

इन लबों की जाँ-नवाज़ी[4] देखना
मुँह से बोल उठने को है जामे-शराब।

जिगर

ग़ुंचे तेरी ग़ुंचा-दहनी[5] को नहीं पाते
हँसते हैं मगर तेरी हंसी को नहीं पाते।

ज़ौक़

वो भोलापन किसी का आह भूला है न भूलेगा,
वो रो देना हँसी में और हँस देना वो रोने में।

आज़ाद

मेरा दिल ले लिया हुशियार ऐसे,
दिया दिल ग़ैर को वो ऐसे भोले।

आह

---

१. तेज़ शराब, दुहरी आँच पर तैयार की गई शराब २. मीठे
३. मुस्कराहट ४. मन-मोहकता ५. कलियों जैसा मुंह

मुस्करा कर वो शोख़ कहता है
आज बिजली गिरी कहीं न कहीं।

मीर

इस नज़ाकत का बुरा हो वो भले हैं तो क्या,
हाथ आयें तो उन्हें हाथ लगाये न बने।

ग़ालिब

जो कुछ सूझती है नई सूझती है,
मैं रोता हूँ उनको हँसी सूझती है।

अमीर

असर है साफ़ नूरे-सुब्ह[1] रंगारंग किरनों का,
जब आयें शोख़ियाँ तो सादगी भी आ ही जाती है।

फ़िराक़

सरसरी उनसे मुलाक़ात है गाहे-गाहे,[2]
बज़्मे-अग़यार[3] में गाहे, सरे-राहे[4] गाहे।

जुरअत

राह पर उनको लगा लाये तो हैं बातों में,
और खुल जायेंगे दो-चार मुलाक़ातों में।

दाग़

उलटा दे, ऐ सबा,[5] तू ही नक़ाबे-रुख़[6] को चेहरे से,
कभी तो देख लें हम भी ज़रा सरकार की सूरत।

सिद्दीक़

एक तो तस्वीर उसकी ग़ैर की महफ़िल में है,
एक हमारे पास भी है जो हमारे दिल में है।

जलील

---

१. प्रातःकाल की रोशनी २. कभी-कभार ३. ग़ैरों की महफ़िल
४. रास्ते में ५, मलयानिल ६. चेहरे का नक़ाब

इस सादगी पे कौन न मर जाये, ऐ ख़ुदा,
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं।

ग़ालिब

ये ज़िन्दगी के कड़े कोस याद आता है
तेरी निगाहे-करम[1] का घना-घना साया।

फ़िराक़

ये किसने आख़िरे-शब दास्ताने-शौक़ दुहराई,
ज़मीं ने करवटें बदलीं फ़लक[2] लेता है अँगड़ाई।

अज्ञात

अँगड़ाई भी वो लेने न पाये उठा के हाथ,
देखा मुझे तो छोड़ दिये मुस्करा के हाथ।

'निज़ाम' रामपुरी

देर तक इस शुब्हे में देखा हिलाल[3]
ये किसी काफ़िर की अँगड़ाई न हो।

अज्ञात

ज़ालिम ये क्या निकाली रफ़्तार रफ़्ता-रफ़्ता
इस चाल पर चलेगी तलवार रफ़्ता-रफ़्ता।

मीर

लटक चलना सजन का भूलता अब तक नहीं मुझको।
तरह वो पाँव रखने की अभी आँखों में फिरती है।

आबरू

ख़रामाँ-ख़रामाँ चले आते हैं वो
गुलिस्ताँ-गुलिस्ताँ हुआ चाहता है।

सालिक

१. कृपा-दृष्टि २. आसमान ३. दूज का चाँद

रुक-रुक के देखते हैं वो अपना ख़रामे-नाज़,[1]
फिर-फिर के देखते हैं कोई देखता न हो।

हाजिक़

कुछ ख़ौफ़े-ख़ुदा कीजिये, इस तरह न चलिये
सौ बार तो इस चाल पे तलवार चली है।

नवाब बेगम 'हिजाब'

चितवनों से मिलता है कुछ सुराग़ बातिन[2] का
चाल पर तो ज़ालिम की सादगी बरसती है।

मिर्ज़ा यास यगाना चंगेज़ी

अभी इस राह से कोई गया है
कहे देती है शोख़ी नक़्शे-पा[3] की।

मोमिन

चाल जैसे कड़ी कमान का तीर
दिल में ऐसे कि जा[4] करे कोई।

ग़ालिब

साँस लेती है वो ज़मीन 'फ़िराक़'
जिस पे वो नाज़ से गुज़रते हैं।

फ़िराक़

है जवानी ख़ुद जवानी का सिंगार,
सादगी गहना है इस सिन के लिए।

अमीर

हाथ डाला मैंने दामन पर तो बोले नाज़ से,
'मेरा दामन छोड़िये, अपना गरीबाँ फाड़िये।'

अमीर

१. नाज़ से चलना २. अन्दर ३. पद-चिह्न ४. जगह

अजीब हुस्न है उन सुर्ख़-सुर्ख़ गालों में
मए-दोआतशा[1] भर दी है दो पियालों में।

जलील

नाज़ुकी उसके लब की क्या कहिये
पंखड़ी एक गुलाब की सी है।

मीर

कितने शीरीं[2] हैं तेरे लब कि रक़ीब,
गालियाँ खा के बदमज़ा न हुआ।

ग़ालिब

तुम्हारे लब हैं बाग़े-हुस्न के फूल,
तबस्सुम[3] उनकी नाज़ुक पंखड़ी है।

अमीर

इन लबों की जाँ-नवाज़ी[4] देखना
मुँह से बोल उठने को है जामे-शराब।

जिगर

ग़ुंचे तेरी ग़ुंचा-दहनी[5] को नहीं पाते
हँसते हैं मगर तेरी हँसी को नहीं पाते।

ज़ौक़

वो भोलापन किसी का आह भूला है न भूलेगा,
वो रो देना हँसी में और हँस देना वो रोने में।

आज़ाद

मेरा दिल ले लिया हुशियार ऐसे,
दिया दिल ग़ैर को वो ऐसे भोले।

आह

---

१. तेज़ शराब, दुहरी आँच पर तैयार की गई शराब २. मीठे
३. मुस्कराहट ४. मन-मोहकता ५. कलियों जैसा मुँह

मुस्करा कर वो शोख़ कहता है
आज बिजली गिरी कहीं न कहीं।

मीर

इस नज़ाकत का बुरा हो वो भले हैं तो क्या,
हाथ आयें तो उन्हें हाथ लगाये न बने।

ग़ालिब

जो कुछ सूझती है नई सूझती है,
मैं रोता हूँ उनको हँसी सूझती है।

अमीर

असर है साफ़ नूरे-सुब्ह[1] रंगारंग किरनों का,
जब आयें शोख़ियाँ तो सादगी भी आ ही जाती है।

फ़िराक़

सरसरी उनसे मुलाक़ात है गाहे-गाहे,[2]
बज़्मे-अग़यार[3] में गाहे, सरे-राहे[4] गाहे।

जुरअत

राह पर उनको लगा लाये तो हैं बातों में,
और खुल जायेंगे दो-चार मुलाक़ातों में।

दाग़

उलटा दे, ऐ सबा,[5] तू ही नक़ाबे-रुख़[6] को चेहरे से,
कभी तो देख लें हम भी ज़रा सरकार की सूरत।

सिद्दीक़

एक तो तस्वीर उसकी ग़ैर की महफ़िल में है,
एक हमारे पास भी है जो हमारे दिल में है।

जलील

---

१. प्रातःकाल की रोशनी २. कभी-कभार ३. ग़ैरों की महफ़िल
४. रास्ते में ५. मलयानिल ६. चेहरे का नक़ाब

तस्वीर क्यों दिखायें तुम्हें, क्यों बतायें नाम
लाये हैं हम कहीं से, किसी बेवफ़ा की है।

'बेख़ुद' देहलवी

न लगावट, न इशारा, न तबस्सुम,[1] न कलाम,[2]
कुछ कशीदा[3] तेरी तस्वीर नज़र आती है।

जलील

तस्वीर में भी बदले हुए हैं वही तेवर,
आँखों में मुरव्वत का कहीं नाम नहीं है।

अज्ञात

दिल्ली के न थे कूचे अवराक़े-मुसव्वर[4] थे,
जो शक्ल नज़र आयी तस्वीर नज़र आयी।

मीर

'फ़िराक़ी' कुश्ता[5] हूँ उस आन का जिस दम कि वो ज़ालिम
कमर से खींचता ख़ंजर चढ़ाता आस्तीं आवे।

फ़िराक़ी

लबरेज़ उसके हाथ में साग़र शराब का
हँसता है अक्से-रुख़[6] से कटोरा गुलाब का।

नासिख़

हाथ में ख़ंजर, गले में तेग़-तेज़
ये इरादे एक मुश्ते-खाक[7] पर।

पंडित दयाशंकर 'नसीम'

इक फ़साना सुन गये इक कह गये,
मैं जो रोया मुस्कराकर रह गये।

हाली

१. मुस्कराहट २. बातचीत ३. खिंची हुई ४. सचित्र पृष्ठ
५. मारा हुआ ६. चेहरे का अक्स ७. मुट्ठी-भर धूल

लेने न पाये उनकी बलाएँ बढ़ा के हाथ
उस बदगुमाँ[1] ने थाम लिये मुस्करा के हाथ।

'निज़ाम' रामपूरी

फैला-फैला आँख में काजल
उलझा-उलझा ज़ुल्फ़ का बादल,
नाज़ुक गर्दन, फूल सी हैकल
सुर्ख़ पपोटे नींद से बोझल,
ये कौन उठा है शरमाता?

'जोश' मलीहाबादी

अक्से-साक़ी शराब में देखा,
माहताब[2] आफ़ताब[3] में देखा।

पंडित दयाशंकर 'नसीम'

इधर देख लेना, उधर देख लेना
फिर उनकी तरफ़ एक नज़र देख लेना।

'असर' लखनवी

अब आगे जो भी रहे मुक़द्दर, रहेगा लेकिन ये नक़्श दिल पर
हम उनका दामन पकड़ रहे हैं, वो अपना दामन छुड़ा रहे हैं।

जिगर

कौन उस बाग़ में, ऐ बादे-सबा, जाता है
रंग रुख़सार से फूलों के उड़ा जाता है।

मुसहफ़ी

बाग़ में जाती है उस गुल की सवारी इन दिनों
दम चुराये फिरती है बादे-बहारी[4] इन दिनों।

अमानत

१. गलत मतलब समझने वाला २. चाँद ३. सूरज
४. वसन्त की हवा

वो तोड़ते हैं तो कलियाँ शिगुफ़्ता[1] होती हैं,
वो रौंदते हैं तो सब्ज़ा निहाल होता है।

'अकबर' इलाहाबादी

ऐ बुतो, इस चार दिन के हुस्न पर
ये मिज़ाज, इतना मिज़ाज, ऐसा मिज़ाज।

अहक़र

पत्ता-पत्ता बूटा-बूटा हाल हमारा जाने है,
जाने न जाने गुल ही न जाने बाग़ तो सारा जाने है।

मीर

पूछते हैं वो कि 'ग़ालिब' कौन है
कोई बतलाओ कि हम बतलायें क्या।

ग़ालिब

क्या काम उन्हें पुर्सिशे-अर्बाबे-वफ़ा[2] से,
मरता है तो मर जाये कोई, उनकी बला ले।

हसरत

अब उनका सामना होता है तो मुँह फेर लेते हैं
कहाँ की रस्मे-उल्फ़त, छोड़ दी साहब-सलामत भी।

हामिद

चार दिन के हुस्न पर इतना गुरूर
चाँदनी होती है कै दिन के लिए।

क़वी

रोने पे जो मेरे हँस रहे हो,
ये कौन सी बात है हँसी की!

मुसहफ़ी

---

१. खिलना २. वफ़ा करने वालों को पूछना

आईना देख अपना सा मुँह ले के रह गया
साहब को दिल न देने पे कितना गुरूर था।

ग़ालिब

बैठे तकते तो हैं कनखियों से
ये नहीं पूछते, खड़े क्यों हो।

'आरज़ू' लखनवी

दिन नहीं, रात नहीं, सुब्ह नहीं, शाम नहीं
वक़्त मिलने का मगर दाख़िले-अय्याम[1] नहीं।

मीर

झिड़की सही, अदा सही, चीने-जबीं[2] सही,
सब कुछ सही पर एक 'नहीं' की नहीं सही।

इंशा

कोई मुँह चूम लेगा इस 'नहीं' पर,
शिकन रह जायेगी यूँ ही जबीं पर।

रियाज़

दिन नहीं, रात नहीं, सुब्ह नहीं, शाम नहीं,
रह गयी एक 'नहीं', 'हाँ' का कोई नाम नहीं।

अमीर

इस 'नहीं' का कोई इलाज नहीं,
रोज़ कहते हैं आप 'आज नहीं'।

दाग़

आप करते हैं बार-बार 'नहीं'
हमको 'हाँ' का भी एतबार नहीं।

'रविश' सिद्दीक़ी

---

१. दिनों में शामिल २. माथे का बल

तग्रम्मुल[1] तो था उनको ग्राने में, क़ासिद,[2]
मगर ये बता तर्ज़-इन्कार क्या थी।

इक़बाल

चाहे ग्रब देख लो ख़फ़ा होकर,
हम भी हरगिज़ नहीं मनाने के।

'गुस्ताख़' रामपुरी

न बिगड़ो बहुत ग्रब बनावट से तुम,
वो होंटों पे देखो हँसी ग्रा गयी।

ग्रज्ञात

रूठने का लुत्फ़ ये है, रूठिये मन जाइये,
रूठते हैं ग्राप लेकिन रूठना ग्राता नहीं।

हिज्र

गिला मैं किससे करूँ तेरी बेवफ़ाई का,
जहाँ में नाम न ले फिर वो ग्राशनाई का।

मीर

नहीं शिकवा मुझे कुछ बेवफ़ाई का तेरी हरगिज़,
गिला तब हो ग्रगर तूने किसी से भी निबाही हो।

मीर 'दर्द'

सितम को हम करम समझे, जफ़ा को हम वफ़ा समझे,
न इस पर भी ग्रगर समझे तो उस बुत से ख़ुदा समझे।

ज़ौक़

ग्रदाएँ उनकी दिल से खेलती हैं,
वो क्या जानें वफ़ा क्या है जफ़ा क्या।

फ़िराक़

१. संकोच २. पत्र ले जाने वाला

हमको उनसे है वफ़ा की उम्मीद,
जो नहीं जानते वफ़ा क्या है।

ग़ालिब

रोज़ के वादों पे मर जायेंगे हम,
यूँ ही गुज़री तो गुज़र जायेंगे हम।

ग्रसीर

वो उम्मीद क्या जिसकी हो इंतिहा,
वो वादा नहीं जो वफ़ा हो गया।

हाली

ग्रौर तो तुमसे क्या नहीं होता,
एक वादा वफ़ा नहीं होता।

'बेख़ुद' देहलवी

झूठे वादों पर थी ग्रपनी ज़िन्दगी,
ग्रब तो वो भी ग्रासरा जाता रहा।

ग्रज़ीज़

ज़ालिम न मैं कहा था कि इस ख़ूँ से दर गुज़र,[1]
'सौदा' का क़त्ल है ये छिपाया न जायेगा।

सौदा

याद उसकी इतनी ख़ूब नहीं 'मीर', बाज़ ग्रा,
नादान फिर वो जी से भुलाया न जायेगा।

मीर

बात करने में तो शरमाते हैं ग्राप,
ज़ुल्म करने में नहीं ग्राता लिहाज़।

मीर 'हसन'

१. बाज़ रह

तुम जफ़ा पर भी तो नहीं क़ायम,
हम वफ़ा उम्र-भर करें क्योंकर।

'बेदिल' अज़ीमाबादी

रंग बदला यार का वो प्यार की बातें गयीं,
वो मुलाक़ातें गयीं, वो चाँदनी रातें गयीं।

हफ़ीज़ जग्राधरी

वो आये हैं पशीमाँ[1] लाश पर अब,
तुझे, ऐ ज़िन्दगी, लाऊँ कहाँ से।

मोमिन

की मेरे क़त्ल के बाद उसने जफ़ा से तौबा,
हाय, उस ज़ूद-पशीमाँ[2] का पशीमाँ होना।

ग़ालिब

बस इसी मुँह से शिकायत करने बैठे थे 'ज़हीर'
ख़ुद पशीमाँ हो गये उसको पशीमाँ देखकर।

ज़हीर

पूछते हैं वो जाँ-निसारों[3] को,
तुम भी 'हसरत' उठो, सलाम करो।

'हसरत' मोहानी

मुस्कराये वो हाले-दिल सुनकर,
और गोया जवाब था ही नहीं।

फ़ानी

ख़ुदा की क़सम उसने खायी जो आज,
क़सम है ख़ुदा की मज़ा आ गया।

दाग़

१. लज्जित २. जल्दी शरमाने वाला ३. जान देने वाले

सच है मेरी बात का क्या एतबार,
सच कहूँगा झूठ मानी जायेगी।

'दिल' शाहजहाँपुरी

तेरे वादे पर जिये हम, तो ये जान झूट जाना,
कि ख़ुशी से मर न जाते अगर एतबार होता।

ग़ालिब

जवाब सोचके दिल में वो मुस्कराते हैं,
अभी ज़बान पे मेरी सवाल भी तो न था।

'बेख़ुद' देहलवी

लिक्खो सलाम ग़ैर के ख़त में ग़ुलाम को,
बंदे का बस सलाम है ऐसे सलाम को।

मोमिन

हमसे खुल जाओ बवक़्ते-मैपरस्ती[1] एक दिन,
वर्ना हम छेड़ेंगे रखकर उज्र-मस्ती[2] एक दिन।

ग़ालिब

मुद्दतें हो गयी हैं चुप रहते,
कोई सुनता तो हम भी कुछ कहते।

महशर

खामोशी मेरी मानीखेज़[3] थी, ऐ 'आरज़ू' कितनी
कि जिसने जैसा चाहा अफ़साना बना डाला।

'आरज़ू' लखनवी

हमारे बाद जो दुनिया कहेगी वो भी सुन लेना,
अभी तो तुम हमारी बेज़बानी देखते जाओ।

नातिक़

१. शराब पीने के वक़्त २. मस्ती का बहाना ३. अर्थपूर्ण

वो ग़ैर से कुछ वादा फ़रमा रहे हैं,
मेरे सर की झूठी क़सम खा रहे हैं।

रियाज़

हाँ 'असर' सच है कि सब वादे हैं उसके झूटे,
कुछ अजब लुत्फ़ है रुक-रुक के क़सम खाने में।

'असर' लखनवी

निगाहे-लुत्फ़ से देखा यही ग़नीमत है,
सलाम उसने हमारा लिया लिया न लिया।

जोशिश

कहते हैं आगे था बुतों में रहम
है, ख़ुदा जानिये, ये किसकी बात।

मीर

उसने वो बात न मानी मेरी,
सुन तो ली मुझसे कहानी मेरी।

अज्ञात

की हमसे वफ़ा तो ग़ैर उसको जफ़ा कहते हैं,
होती आयी है कि अच्छों को बुरा कहते हैं।

ग़ालिब

अब और इसके सिवा चाहते हो क्या 'मुल्ला',
ये कम है उसने तुम्हें मुस्करा के देख लिया।

आनन्द नरायन 'मुल्ला'

यूँ पूछते हैं ग़ैर से मेरे जुनूँ[1] का हाल,
'दीवाना बन गया है कि दीवाना हो गया?'

अज्ञात

१. पागलपन

कुछ इस अदा से यार ने पूछा मेरा मिज़ाज,
कहना पड़ा कि 'शुक्र है परवर्दिगार का!'

साक़िब

देख लेता है वो पहले चार-सू[1] अच्छी तरह,
चुपके से फिर पूछता है, 'मीर, तू अच्छी तरह?'

मीर

आप और मुझ पर करम, शाने-ख़ुदा,
आप और पूछें ग़रीबों का मिज़ाज।

अहक़र

हाल बदगुफ़्तनी[2] नहीं मेरा,
तुमने पूछा तो मेह्रबानी की।

मीर

कभी नेकी भी उसके जी में गर आ जाये है मुझसे।
जफ़ाएँ याद कर अपनी वो शरमा जाये है मुझसे।

ग़ालिब

उनके भोलेपन के सदक़े जाइये,
कहते हैं, 'मुझसे तुम्हें क्या काम है?'

अज्ञात

मुँह फेर कर 'फ़िराक़' वो कुछ मुस्करा दिये,
अब और सुनते हाले-दिले-बेक़रार क्या।

फ़िराक़

मैं रो-रो जो कहने लगा दर्दे-दिल,
वो मुँह फेर कर मुस्कराने लगा।

जुरअत

१. चारों तरफ २. न कहने लायक

नहीं मालूम मंज़ूर उसको क्या है,
बुरी चितवन से काफ़िर देखता है।

इंशा

कुछ उसकी वज़ा बिगड़ी, कुछ है वो पैमाँ-शिकन[1] बिगड़ा,
ये सज-धज है तो देखोगे ज़माने का चलन बिगड़ा।

मुसहफ़ी

तरह देना, उड़ा देना, लगा देना, बुझा देना,
ये ढब हैं याद तिस पर कुछ फ़रेब और फ़न नहीं आता।

'नज़ीर' अकबराबादी

जिसने देखा उसे, किया सिज्दा,
ग़रज़ उस बुत ने भी ख़ुदाई की।

पर्वाना

ज़िद की है और बात मगर ख़ू[2] बुरी नहीं,
भूले से उसने सैकड़ों वादे वफ़ा किये।

ग़ालिब

ख़ुदा जाने क्या बात है इसमें 'मख़फ़ी'[3]
कि इस ज़ुल्म पर जी को भाता बहुत है।

मख़फ़ी

मार डालेगी मुझे ये ख़ुशबयानी आपकी,
मौत भी आयेगी मुझको तो ज़बानी आपकी।

प्यारे साहब 'रशीद'

इतनी ही तो बस कसर है तुममें,
कहना नहीं मानते किसी का।

दाग़

१. वादा तोड़ने वाला २. स्वभाव ३. छुपी हुई

मैं ज़बाँ से तुमको सच्चा गो लाख बार कह दूँ,
इसे क्या करूँ कि दिल को नहीं एतबार होता।

अमीर

अभी कमसिन हैं, ज़िदें भी हैं निराली उनकी,
इस पे मचले हैं कि हम दर्दे-जिगर देखेंगे।

फ़साहत

ज़िंदगी कहते हैं किसको? मौत किसका नाम है?
मेह्‌रबानी आपकी, नामेह्‌रबानी आपकी।

प्यारे साहब 'रशीद'

हम जिस पर मर रहे हैं वो है बात ही कुछ और,
आलम में तुझ से लाख सही, तू मगर कहाँ।

हाली

इधर हमसे भी बातें लाख करते हैं लगावट की,
उधर ग़ैरों से भी कुछ अहदो-पैमाँ[1] होते जाते हैं।

'अकबर' इलाहाबादी

इस छेड़ में कोई जो न मरता हो तो मर जाये,
वादा है कहीं और, इरादा कहीं और।

नज़्म

मैंने छेड़ा तो किस अदा से कहा,
'कुछ सुनोगे मेरी ज़बान से आज।'

रियाज़

'जिगर' वो भी तो सर-ता-पा[2] मुहब्बत ही मुहब्बत है,
मगर उनकी मुहब्बत साफ़ पहचानी नहीं जाती।

'जिगर'

१. वादे २. सर से पैर तक

क़यामत हैं बाँकी अदाएँ तुम्हारी,
इधर आओ ले लूँ बलाएँ तुम्हारी।

दाग़

ऐसे बिगड़े कि फिर जफ़ा भी न की,
दुश्मनी का भी हक़ अदा न हुआ।

'हसरत' मोहानी

बेखुदी[1] बेसबब नहीं 'ग़ालिब'
कुछ तो है जिसकी पर्दादारी है।

ग़ालिब

चला न उठके वहीं चुपके-चुपके फिर तू 'मीर'
अभी गली से तो उसकी पुकार लाया हूँ।

मीर

वो गया उठकर जिधर को मैं उधर हैरान-सा,
उसके जाने पर भी कितनी देर तक तकता रहा।

जुरअत

वो शरमाई सूरत, वो नीची निगाहें,
वो भूले से उनका इधर देख लेना।

'हसरत' मोहानी

साथ शोख़ी के कुछ हिजाब[2] भी है,
इस अदा का कहीं जवाब भी है।

दाग़

तेरे कूचे इस बहाने मुझे दिन से रात करना,
कभी इससे बात करना, कभी उससे बात करना।

मुसहफ़ी

---

१. खोया-खोया रहना २. लज्जा

आज तो 'दाग़' को हम लोग तेरे कूचे से,
इस तरह खींच के लाये हैं कि जी जानता है।

दाग़

एक लहज़ा[1] नहीं क़रार जी को,
मौत आये बस ऐसी ज़िन्दगी को।

मोमिन

फिर मुझे ले चला वहीं, देखो
दिले-ख़ानाख़राब[2] की बातें।

ज़ौक़

कहते तो हो यूँ कहते, यूँ कहते जो यार आता,
सब कहने की बातें हैं, कुछ भी न कहा जाता।

मीर

ज़बान दिल की हक़ीक़त को क्या बयाँ करती,
किसी का हाल किसी से कहा नहीं जाता।

अज़ीज़

तुम अपने घर के थे, तुमसे कोई पर्दा न था लेकिन,
जो दिल की बात थी ज़ालिम वही मुँह से नहीं निकली।

फ़िराक़

शब को मेरी चश्मे-हसरत[3] का सब दुख-दर्द उनसे कह जाना,
दाँतों में दबाकर होंट अपना कुछ सोच के उनका रह जाना।

शाद

है कुछ ऐसी ही बात जो चुप हूँ,
वर्ना क्या बात कर नहीं आती।

ग़ालिब

---

१. क्षण २. उजड़ा हुआ (जिसका घर बरबाद हो गया हो) दिल
३. हसरत-भरी निगाह

दिल वो है कि फ़रियाद से लबरेज़[1] है हर वक़्त,
हम वो हैं कि कुछ मुँह से निकलने नहीं देते।

'अकबर' इलाहाबादी

पुर[2] हूँ शिकवे से मैं राग से जैसे बाजा,
एक ज़रा छेड़िये फिर देखिये क्या होता है।

ग़ालिब

आप कुछ समझे, बातों-बातों में
हाल किसका सुना दिया मैंने ?

निज़ाम

कोई महरम[2] नहीं मिलता जहाँ में
मुझे कहना है कुछ अपनी ज़बाँ में।

हाली

मैं जो बोला, कहा कि ये आवाज़
उसी ख़ानाख़राब की सी है।

मीर

कहके ये और कुछ कहा न गया
कि मुझे आप से शिकायत है।

'आरज़ू' लखनवी

जब पुर्सिशे-ग़म वो करते हैं क्या जानिये क्या हो जाता है,
कुछ यूँ भी ज़बाँ नहीं खुलती, कुछ दर्द सिवा[3] हो जाता है।

फ़ानी

मान लेता हूँ तेरे वादे को,
भूल जाता हूँ मैं कि तू है वही।

जलील

१. भरा हुआ २. बात समझने वाला ३. ज़्यादा

आगे किसू के दस्ते-तमा[1] क्या करें दराज़[2]
वो हाथ सो गया है सिरहाने धरे-धरे।

मीर

गदा-नवाज़[3] ने सबके तो हाथ थाम लिये,
हमारा दस्ते-तलब[4] मुस्करा के छोड़ दिया।

बेहज़ाद

फ़कीरी में भी मुझको माँगने से शर्म आती है,
सवाली[5] होके मुझसे हाथ फैलाया नहीं जाता।

मख़मूर

जान तुम पर निसार[6] करते हैं,
हम नहीं जानते दुआ क्या है।

ग़ालिब

मुझे जिंदगी की दुआ देने वाले,
हँसी आ रही है तेरी सादगी पर।

गोपाल मित्तल

ज़िंदगी किस तरह कटेगी 'सैफ़'
रात कटती नज़र नहीं आती।

सैफ़

कोई अफ़साना छेड़ तनहाई,[7]
रात कटती नहीं जुदाई की।

फ़िराक़

मौत माँगी थी, ख़ुदाई तो नहीं माँगी थी,
ले दुआ कर चुके अब तर्के-दुआ[8] करते हैं।

मिर्ज़ा यास यगाना चंगेज़ी

१. भिक्षा का हाथ २. लम्बा (हाथ फैलाना) ३. भिखारियों पर दया करने वाला ४. याचक हाथ ५. याचक ६. निछावर ७. एकान्त ८. दुआ का खंडन

देखें कब तक रहे ये सोहबत,
गालियाँ खाइये, दुआ करिये।

मीर

चूम लेने दें वो अपने लब, ये मैं कैसे कहूँ,
वर्ना कुछ मुश्किल न था दुश्नामे-जानाँ[1] का जवाब।

'नियाज़' फ़तेहपुरी

कुछ कटी हिम्मते-सवाल में उम्र,
कुछ उमीदे-जवाब में गुज़री।

फ़ानी

मैं पूछता तो हूँ मगर जवाब के लिए नहीं,
ये क्यों फिरी तेरी नज़र, ये क्यों बदल गयी हवा?

फ़िराक़

करेंगे अर्ज़ भी, कुछ चैन ले ज़रा, ऐ दिल,
वो अंजुमन में हमारी तरफ़ नज़र तो करें।

मेहृ

क़यामत है कि होवे मुद्दई का हमसफ़र, 'ग़ालिब',
वो काफ़िर जो ख़ुदा को भी न सौंपा जाये है मुझसे।

ग़ालिब

इलाही क्यों नहीं आती क़यामत माजरा क्या है,
हमारे सामने पहलू में वो दुश्मन के बैठे हैं।

दाग़

सामने उसके न कहते, मगर अब कहते हैं,
लज़्ज़ते-इश्क़[2] गयी ग़ैर के मर जाने से।

अज्ञात

१. प्रेमिका की गाली २. प्रेम का आनन्द

ग़ैर लें महफ़िल में बोसे जाम के,
हम रहें यूँ तश्ना-लब[1] पैग़ाम के।

ग़ालिब

सच है तुम्हें किसी से न मतलब न कुछ ग़रज़,
दिन-रात घर में ग़ैर के मेहमाँ हमीं तो हैं।

तस्लीम

अदू[2] की तरफ़ फिर नज़र हो गयी,
किधर की हवा थी, किधर हो गयी।

शम्स

ले शबे-वस्ले-ग़ैर भी काटी,
तू मुझे आज़मायेगा कब तक?

मोमिन

दिल से ख़याले-यार को टाले हुए तो हैं,
हम जान देके दिल को सँभाले हुए तो हैं।

फ़ानी

न हम समझे न आप आये कहीं से,
पसीना पोंछिये अपनी जबीं[3] से।

अनवर

उनको 'हाली' भी बुलाते हैं घर अपने मेहमाँ,
ज़रा देखना आपकी और आपके घर की सूरत।

हाली

आज तो दर्दे-हिज्र[4] भी कम है
आज तो कोई आया होता।

फ़िराक़

१. प्यासा २. दुश्मन ३. माथा ४. वियोग की पीड़ा

है ख़बर गर्म उनके आने की,
आज ही घर में बोरिया न हुआ।

ग़ालिब

आने में सदा देर लगाते ही रहे तुम,
जाते रहे हम जान से, आते ही रहे तुम।

नासिख़

न जाना कि दुनिया से जाता है कोई,
बड़ी देर की, मेहबाँ, आते-आते।

दाग़

कोई आया न आयेगा, लेकिन
क्या करें गर न इंतिज़ार करें।

फ़िराक़

मौत का इंतिज़ार बाक़ी है,
आपका इंतिज़ार था, न रहा।

फ़ानी

शबे-इंतिज़ार की कशमकश में न पूछ कैसे सहर हुई,
कभी एक चराग़ जला दिया, कभी एक चराग़ बुझा दिया।

मजरूह सुल्तानपुरी

तुम्हें ये भी ख़याल आया,
कि कोई राह देखता होगा।

'निज़ाम' रामपुरी

किसे यक़ीन कि तुम देखने को आओगे,
आख़िरी वक़्त मगर इंतिज़ार और सही।

आग़ा 'शायर' देहलवी

वो आ भी जाते, वो हो भी जाते,
चश्मे-तमन्ना फिर भी तरसती।

मजाज़

वो आयें घर में हमारे ख़ुदा की क़ुदरत है,
कभी हम उनको कभी अपने घर को देखते हैं।

ग़ालिब

ख़ुदा जाने ख़बर आये न आये,
पलटकर नामाबर[1] आये न आये।

'सफ़ी' लखनवी

क़ासिद पयामे-शौक़ को देना बहुत न तूल,
कहना फ़क़त ये उनसे कि 'आँखें तरस गयीं।'

'जलील' मानिकपुरी

रात-दिन नामओ-पैग़ाम[2] कहाँ तक होंगे,
साफ़ कह दीजिये, मिलना हमें मंज़ूर नहीं।

दाग़

किसी को भेज के ख़त हाय ये कैसा अज़ाब[3] आया,
कि हर एक पूछता है, नामाबर आया? जवाब आया?

'मजनूँ' अज़ीमाबादी

मेरा ख़त उसने पढ़ा, पढ़ के नामाबर से कहा,
यही जवाब है, 'इसका कोई जवाब नहीं।'

'अमीर' मीनाई

ले के ख़त उनका किया ज़ब्त बहुत कुछ,
थरथराते हुए हाथों ने भरम खोल दिया।

'जिगर' मुरादाबादी

चंद तस्वीरे-बुताँ, चंद हसीनों के ख़ुतूत,
बाद मरने के मेरे घर से ये सामाँ निकला।

ग़ालिब

---

१. संदेश ले जाने वाला २. पत्र और संदेश ३. मुसीबत

दे के ख़त मुँह देखता है नामाबर,
कुछ तो पैग़ामे-ज़बानी और है।

ग़ालिब

आधी से ज़ियादा शबे-ग़म काट चुका हूँ,
अब भी अगर आ जाओ तो ये रात बड़ी है।

'साक़िब' लखनवी

सारी उम्मीद रही जाती है,
हाय, फिर सुब्ह हुई जाती है।

'बिस्मिल' अज़ीमाबादी

उम्मीद तो बँध जाती, तस्कीन तो हो जाती,
वादा न वफ़ा करते, वादा तो किया होता।

चराग़ हसन 'हसरत'

इस वादे का मतलब क्या समझूँ, इक़रार[1] भी है, इन्कार भी है
अबरू[2] पे शिकन, होंटों पे हँसी, इक़रार भी है, इन्कार भी है।

'वहशी' शाहजहाँपूरी

वादे पे तुम न आये तो कुछ हम न मर गये,
कहने को बात रह गयी और दिन गुज़र गये।

रिंद

तुम न आये तो क्या सहर[3] न हुई,
हाँ, मगर चैन से बसर न हुई।

अज्ञात

जो तुम्हारी तरह तुमसे कोई झूटे वादे करता,
तुम्हीं मुंसिफ़ी से कह दो, तुम्हें एतबार होता?

दाग़

---

१. स्वीकृति २. भवें ३. सुबह

वादा करके और भी आफ़त में डाला आपने,
ज़िंदगी मुश्किल में थी अब मरना मुश्किल हो गया।

'जलील' मानिकपुरी

फिर न आये जो वादा करके गये,
आज का दिन है और वो दिन है।

'असर' लखनवी

तुझसे तो कुछ कलाम नहीं, लेकिन ऐ नदीम,[1]
मेरा सलाम कहियो अगर नामाबर मिले।

ग़ालिब

वस्ल उसका ख़ुदा नसीब करे,
'मीर' जी चाहता है क्या-क्या कुछ।

मीर

अजब अपना हाल होता जो विसाले-यार होता,
कभी जान सदक़े होती कभी दिल निसार होता।

दाग़

मिलते ही उनके भूल गयीं कुल्फ़तें[2] तमाम,
गोया हमारे सर पे कभी आसमाँ न था।

हाली

मिलते ही किसी के खो गये हम,
जागे जो नसीब, सो गये हम।

तपिश

वस्ल का दिन और इतना मुख़्तसर,
दिन गिने जाते थे इस दिन के लिए।

अमीर

---

१. दोस्त २. कष्ट

आखिरी साअत[1] शब-रुख्सत की है,
आओ, अब तो प्यार की बातें करें।

चराग़ हसन 'हसरत'

आपको जाते हुए देख के सँभलेगा न दिल,
उसको बातों में लगा लूँ तो चले जाइयेगा।

अज्ञात

उनके जाते ही ये क्या हो गयी घर की सूरत,
न वो दीवार की सूरत है न दर की सूरत।

हाली

बस इतना होश था मुझे रोज़े-विदाए-दोस्त,
वीराना था नज़र में जहाँ तक नज़र गयी।

तिरलोकचंद 'महरूम'

वक्त तो दो ही कठिन गुज़रे हैं सारी उम्र में,
एक तेरे आने के पहले, एक तेरे जाने के बाद।

अज्ञात

विदाए-यार से दिल पर मलाल है सो है,
ज़बाँ से गो न कहा, जी का हाल है सो है।

शाह 'वाक़िफ़'

दम लिया था न क़यामत ने हनोज़,[2]
फिर तेरा वक़्ते-सफर याद आया।

ग़ालिब

काफी दिनों जिया हूँ किसी दोस्त के बग़ैर,
अब तुम भी साथ छोड़ने को कह रहे हो, खैर।

फ़िराक़

१. घड़ी २. अभी तक

दिल से नज़दीक हैं आँखों से बहुत दूर नहीं,
मगर इस पर भी मुलाक़ात उन्हें मंज़ूर नहीं।

'सफ़ी' लखनवी

हमको हमारी मौत भी अब पूछती नहीं,
यूँ ज़िंदगी किसी की खुदाया बसर न हो।

मसूद

कोई हम से, न हम किसी से खुश,
कौन हो ऐसी ज़िंदगी से खुश।

'उम्मीद' अमेठवी

उस तरफ़ उनकी जफ़ा है और वो,
इस तरफ़ मेरी वफ़ा है और मैं।

'नश्तर' हथगामी

आँसू थे सो खुश्क हुए, जी है कि उमड़ा आता है,
दिल पे घटा सी छायी है, खुलती है न बरसती है।

फ़ानी

मेरा कोई अहवाल[1] क्या जानता है,
जो गुज़रे है मुझपर खुदा जानता है।

क़ायम

ठानी थी दिल में अब न मिलेंगे किसी से हम,
पर क्या करें कि हो गये नाचार जी से हम।

मोमिन

याँ के सुपैदो-सियाह[2] में हमको दख्ल जो है सो इतना है,
रात को रो-रो सुब्ह किया और दिन को जूँ तूँ शाम किया।

मीर

१. हाल २. सफ़ेद और काला

बैठे हैं जिधर वो, सब उधर देख रहे हैं,
हम देखने वालों की नज़र देख रहे हैं।

दाग़

क्या से क्या कर दिया मुहब्बत ने,
अब तो देखो वो 'असर' ही नहीं।

'असर' देहलवी

शामे-फिराक़[1] ज़िक्रे-जवानी में कट गयी,
क्या रात थी कि एक कहानी में कट गयी।

'अज़ीज़' लखनवी

उनको आता है प्यार पर गुस्सा,
मुझको गुस्से पे प्यार आता है।

अमीर

हम आह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम,
वो क़त्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होता।

'अकबर' इलाहाबादी

न छेड़, ऐ नकहते-बादे-बहारीं,[2] राह लग अपनी,
तुझे अठखेलियाँ सूझी हैं हम बेज़ार बैठे हैं।

इंशा

दुआएँ दे, मेरे बाद आने वाले, मेरी वहशत को,
बहुत काँटे निकल आये मेरे हमराह[3] मंज़िल से।

साक़िब

क़यामत है बशर[4] के वास्ते मजबूर हो जाना,
ज़मीं का सख़्त हो जाना, फलक[5] का दूर हो जाना।

रियाज

---

१. वियोग की शाम २. बसंती हवा की ख़ुशबू ३. साथ
४. इन्सान ५. आसमान

उम्र तो सारी कटी इश्क़े-बुताँ[1] में 'मोमिन'
आख़िरी वक़्त में क्या खाक मुसल्माँ होंगे।

मोमिन

वस्ल[2] हो या फ़िराक़[3] हो 'अकबर'
जागना रात भर मुसीबत है।

'अकबर' इलाहाबादी

हुस्न और इश्क़ की लाग में अकसर छेड़ उधर से होती है,
शमा का शोला जब लहराया उड़ के चला पर्वाना भी।

'आरज़ू' लखनवी

दुनिया की बलाओं को जब जमा किया मैंने,
धुँधली-सी मुझे दिल की तस्वीर नज़र आयी।

फ़ानी

क़िस्मत तो देखिये कि कहाँ टूटी जा कमन्द,
दो चार हाथ जब कि लबे-बाम[4] रह गया।

क़ायम

सारी दुनिया के हुए मेरे सिवा,
मैंने दुनिया छोड़ दी जिनके लिए।

अमीर

उम्र कटने को कट गयी लेकिन,
एक दिन चैन से बसर न हुई।

ऐश

ख़ंजर चले किसी पे, तड़पते हैं हम 'अमीर'
सारे जहाँ का दर्द हमारे जिगर में है।

अमीर

---

१. बुतों (ख़ूबसूरत लोगों) का इश्क़ २. मिलन ३. वियोग
४. कोठे का सिरा।

मुहब्बत में एक ऐसा वक़्त भी आता है इन्साँ पर,
सितारों की चमक से चोट पड़ती है रगे-जाँ पर।

अमीर

मुझे ग़म से इस वास्ते प्यार है,
कि मेरे बुरे वक़्त का यार है।

अज्ञात

फेंक दूँ दिल को अभी चीर के पहलू अपना,
तुझ पे क़ाबू नहीं, दिल पर तो है क़ाबू अपना।

रिंद

बेनियाज़ी[1] से, मुदारात[2] से जी डरता है,
जाने क्या बात है, हर बात से जी डरता है।

हबीब अशअर

इरादे बाँधता हूँ, सोचता हूँ तोड़ देता हूँ,
कहीं ऐसा न हो जाये, कहीं ऐसा न हो जाये।

'हफ़ीज़' जालंधरी

दीदनी[3] है शिकस्तगी[4] दिल की,
क्या इमारत ग़मों ने ढायी है।

मीर

अपना-अपना हाल कह लेने दो 'नातिक़' सबको तुम,
जानता है वो कि किसके दिल में कितना दर्द है।

नातिक़

दिल बहलने को लोग सुनते हैं,
दर्दे-दिल दास्तान है गोया।

जलील

१. उपेक्षा २. आदर ३. देखने लायक़ ४. टूटा होना

मैं अपने दिल से कहता हूँ कि अब तो दर्द कुछ कम है;
मेरा दिल मुझसे कहता है कि अकसर यूँ भी होता है।

'आसी' आल्दनी

दिले-नादाँ तुझे हुआ क्या है,
आख़िर इस दर्द की दवा क्या है।

ग़ालिब

इलाजे-दर्दे-दिल तुम से मसीहा हो नहीं सकता,
तुम अच्छा कर नहीं सकते, मैं अच्छा हो नहीं सकता।

मुज़्तर

फोड़ा-सा सारी रात जो पकता रहा ये दिल,
तो सुब्ह तक तो हाथ लगाया न जायेगा।

मीर

'फ़िराक़' एक-एक से बढ़कर चारासाज़े-दर्द[1] है लेकिन,
ये दुनिया है, यहाँ हर दर्द का दर्माँ[2] नहीं होता।

फ़िराक़

दिल नहीं मानता जहाँ जाऊँ,
हाय मैं क्या करूँ कहाँ जाऊँ?

नासिख़

यादे-ग़म दिल से कभी जाती नहीं,
अब तो भूले से हँसी आती नहीं।

तअश्शुक़

रंजो-ग़म इश्क़ के गुज़र भी गये,
अब तो वो ध्यान से उतर भी गये।

अज्ञात

१. दर्द को अच्छा करने वाले २. इलाज

न भूलेगा वो वक़्ते-रुख़्सत किसी का,
मुझे मुड़के फिर एक नज़र देख लेना।

'हसरत' मोहानी

दिन-रात की ये बेचैनी है, ये आठ पहर का रोना है,
आसार बुरे हैं फ़रक़त[1] में मालूम नहीं क्या होना है।

'अकबर' इलाहाबादी

जब से ओझल है तू इन आँखों से,
रात कैसी कि दिन अँधेरा है।

'आरज़ू' लखनवी

ख़फ़ा न हो तो ये पूछूँ कि तेरी जान से दूर,
जो तेरे हिज्र[2] में जीता है, मर भी सकता है।

फ़ानी

ग़ज़ालाँ[3] तुम तो वाक़िफ़ हो कहो मजनूँ के मरने की,
दिवाना आ गया आख़िर को वीराने पे क्या गुज़री।

राजा रामनारायन लाल 'मोज़ूँ'

बहुत पसंद है मुझको खामोशी और इसलिए
दिल अपना होता है अपना ख्याल होता है

१. वियोग २. विरह ३. हिरन

कभी हम में तुम में भी चाह थी, कभी हम में तुम में भी राह थी,
कभी हम भी तुम भी थे आशना तुम्हें याद हो कि न याद हो।

मोमिन

प्रेमियों की बातें

राज़ो-नियाज़

दिल वो नगर नहीं जो फिर ग्राबाद हो सके,
पछताग्रोगे, सुनो हो, ये बस्ती उजाड़ के।

मीर

यूँ ज़िंदगी गुज़ार रहा हूँ तेरे बग़ैर,
जैसे कोई गुनाह किये जा रहा हूँ मैं।

जिगर

तुम हमारे किसी तरह न हुए,
वरना दुनिया में क्या नहीं होता।

मोमिन

कहा तुमने कि क्यों हो ग़ैर के मिलने में रुस्वाई,[1]
बजा कहते हो, सच कहते हो, फिर कहियो कि हाँ क्यूँ हो।

ग़ालिब

ग़नीमत है ये साथ एक रात का,
ख़ुदा जाने कल हम कहाँ तुम कहाँ।

फ़िराक़

१. बदनामी

लगे मुँह भी चिढ़ाने देते-देते गालियाँ साहब,
ज़बाँ बिगड़ी तो बिगड़ी थी, ख़बर लीजे दहन[1] बिगड़ा।

ग्रातश

तुमसे कुछ कहने को था, भूल गया,
हाय क्या बात थी क्या भूल गया।

निज़ाम

हम फ़क़ीरों से कज-ग्रदाई[2] क्या,
ग्रान बैठे जो तुमने प्यार किया।

मीर

तुम मेरे पास होते हो गोया,
जब कोई दूसरा नहीं होता।

मोमिन

तुम जानो तुमको ग़ैर से जो रस्मो-राह हो,
मुझको भी पूछते रहो तो क्या गुनाह हो।

ग़ालिब

कहने देती नहीं कुछ मुँह से मुहब्बत तेरी,
लब पे रह जाती है ग्रा-ग्रा के शिकायत मेरी।

दाग़

ग़म मुझे देते हो ग्रौरों की ख़ुशी के वास्ते,
क्यों बुरे बनते हो तुम नाहक़ किसी के वास्ते।

रियाज़

क्योंकर कहूँ ज़बाँ से कि तू मेहरबाँ नहीं,
लेकिन मेरा नसीब कि मैं शादमाँ[3] नहीं।

'जिगर' बरेलवी

१. मुँह २. टेढ़ी ग्रदाएँ दिखाना ३. प्रसन्न

अब करके फ़रामोश[1] तो नाशाद करोगे,
पर हम जो न होंगे तो बहुत याद करोगे।

मीर

आप अच्छे ही सही, 'बेख़ुद' निकम्मा ही सही,
आप अगर ऐसा ही कहते हैं तो ऐसा ही सही।

'बेख़ुद' मोहानी

जब कहा हैरत है, मैं तुम पर फ़िदा तुम ग़ैर पर,
हँस के बोले, अपने-अपने दिल के आ जाने की बात।

सग़ीर

क़ता कीजे न तअल्लुक़ हम से,
कुछ नहीं है तो अदावत ही सही।

ग़ालिब

बदनाम कौन होगा अगर मर गया 'निज़ाम',
तुम जानते हो कोई इसे जानता नहीं।

निज़ाम

सारी दुनिया समझती है कि सौदाई[2] है,
अब मेरा होश में आना तेरी रुस्वाई है।

मुहम्मद अली 'जौहर'

रात की बात का मज़कूर[3] है क्या,
छोड़िये, रात गयी बात गयी।

अज्ञात

मान लो तुमसे रूठ जाये कोई,
तुम भला किस तरह मनाओगे।

फ़िराक़

१. भूलना २. पागल ३. ज़िक्र

क्यों हुए हो तुम कहो दुश्मन हमारे इस क़दर,
दोस्त का दुश्मन कोई होता है प्यारे इस क़दर।

यकरंग

दूर बहुत भागो हो हमसे सीख तरीक़ ग़िज़ालों[1] का,
वहशत करना[2] शेवा है क्या अच्छी आँखों वालों का।

मीर

अपने अहदे-वफ़ा को भूल गये,
तुम तो बिल्कुल ख़ुदा को भूल गये।

'मुज़्तर' ख़ैराबादी

तुम तो दिल माँगो हो, याँ जान तलक़ हाज़िर है,
बात ये भी है कोई आप के फ़रमाने की।

अहसन

कौन था आप से जो बाहर था,
आप आते तो आपका घर था।

हसन

ये सच कि झूट दावाए-दोस्ती, लेकिन,
कभी हमें भी तो एक बार आज़माना था।

क़ायम

मैंने कहा कि बज़्मे-नाज़ ग़ैर से चाहिये तिही,[3]
सुनके सितमज़रीफ़[4] ने मुझको उठा दिया कि यूँ।

ग़ालिब

हमने तो जान तक न प्यारी की,
आपने क़द्र क्या हमारी की।

ख़ाकसार

१. हिरन २. घबराना ३. ख़ाली ४. ज़ालिम

लो वो भी कहते हैं कि ये बे-नंगो-नाम[1] है,
ये जानता अगर तो लुटाता न घर को मैं।

ग़ालिब

काफ़िर हो जिसके दिल में कुछ और आरज़ू हो,
एक मुख़्तसर[2] सी जा[3] हो और मैं हूँ और तू हो।

बयाँ

कभी तो मेहरबाँ हो हम पे, ऐ बुत,
कि आखिर हम भी बंदे हैं ख़ुदा के।

आशना

ग़ैर से मिलना तुम्हारा सुनके गो हम चुप रहे,
पर सुना होगा कि तुमको एक जहाँ ने क्या कहा।

क़ायम

तुझी पर कुछ, ऐ बुत, नहीं मुनहसिर,
जिसे हमने पूछा ख़ुदा कर दिया।

मीर

इतना हुमक-हुमक के जो उठते हो, ख़ैर है?
लायक़ हैं हम तो क़त्ल के, पर कुछ गुनाह भी!

ज़िया

चंद दिन, आह मियाँ, मैं भी ख़ुदाई कर लूँ,
झूट ही कह दो कि 'हाँ, तुमसे मुहब्बत है हमें।'

ख़ाकसार

मेरे हक़ में तो बेहतर है मुझे आराम होवेगा,
वले तू क़त्ल करने से मेरे बदनाम होवेगा।

अहक़र

१. जिसकी कोई इज़्ज़त न हो २. छोटी ३. जगह

वफ़ा को तुम जफ़ा समझे, सितम को हम करम समझे,
उधर कुछ दिल में तुम समझे, इधर कुछ दिल में हम समझे।

लाला बालमुकुन्द 'हुज़ूर'

हम पे सौ ज़ुल्मो-सितम कीजियेगा,
एक मिलने को कम न कीजियेगा।

बेदार

तुम्हें ग़ैरों से कब फ़ुरसत, कब अपने ग़म से हम ख़ाली,
चलो बस हो चुका मिलना, न तुम ख़ाली न हम ख़ाली।

मिर्ज़ा जाफ़र अली 'हसरत'

इस अदा का हूँ तेरी दीवाना,
देखना मुझको और छुप जाना।

जोशिश

यही है आज़माना तो सताना किसको कहते हैं,
अदू[1] के हो लिये जब तुम तो मेरा इम्तिहाँ क्यों हो।

ग़ालिब

हमने क़िस्सा बहुत कहा दिल का,
न सुना तुमने माजरा दिल का।

नवाब आसिफ़ुद्दौला 'आसिफ़'

एक घर में भी कभी मिलके नहीं बैठते हैं,
हम कहीं बैठते हैं आप कहीं बैठते हैं।

जुरअत

हमारे आगे तेरा जब किसी ने नाम लिया,
दिले-सितमज़दा[2] को हमने थाम-थाम लिया।

मीर

१. दुश्मन २. घायल

सर मेरा काट के पछताइयेगा,
झूठी फिर किसकी क़सम खाइयेगा।

वज़ीर

जो कहोगे तुम, कहेंगे हम भी 'हाँ, यूँ ही सही,
आपकी गर यूँ खुशी है मेहर्बां यूँ ही सही।'

ज़ौक़

भरे हैं आंखों में आंसू उदास बैठे हो,
ये किस ग़रीब की तुरबत[1] के पास बैठे हो।

तअश्शुक़

क़त्ल किये पर ग़ुस्सा क्या है, लाश मेरी उठवाने दो,
हम भी जान से जाते रहे हैं, तुम भी आओ जाने दो।

मीर

ऐ सितम-ईजाद,[2] कब तक ये सितम देखा करें,
तू करे ग़ैरों से बातें और हम देखा करें।

जुरअत

जिस लब के ग़ैर बोसे लें उस लब से 'शेफ़्ता'
कमबख़्त गालियाँ भी नहीं मेरे वास्ते।

शेफ़्ता

खंदए-अहले-जहाँ[3] की हमें परवाह न थी,
तुम भी हँसते हो मेरे हाल पे, रोना है यही।

हसरत

आह को चाहिये एक उम्र असर होने तक,
कौन जीता है तेरी ज़ुल्फ़ के सर होने तक।

ग़ालिब

---

१. कब्र २. सितम ईजाद करने वाला ३. दुनिया वालों का हँसना

जो कोई आवे है नज़दीक ही बैठे है तेरे,
हम कहाँ तक तेरे पहलू से सरकते जायें।

मीर हसन

मैंने भी तेरे इश्क़ में क्या-क्या नहीं किया,
सब कुछ किया है पर तुझे रुस्वा नहीं किया।

मुसहफ़ी

देखने को रहे तरसते हम,
न किया रहम तूने पर न किया।

मीर 'दर्द'

तुम मुख़ातिब[1] भी हो क़रीब भी हो,
तुमको देखें कि तुमसे बात करें।

फ़िराक़

ईदे-आइन्दा तक रहेगा याद
हो चुकी ईद तू गले न मिला।

मीर

तुम्हारा नाम लेता था तो कुछ तस्कीन होती थी,
कोई हाथों से गोया ये कलेजा थाम लेता था।

नासरी

हर एक बात पे कहते हो तुम कि तू क्या है,
तुम्हीं कहो कि ये अंदाज़े-गुफ़्तगू क्या है।

ग़ालिब

तुम नहीं पास कोई पास नहीं,
अब मुझे ज़िंदगी की आस नहीं।

'जिगर' बरेलवी

---

१. सामने, जिसे सम्बोधित किया जाये

ग़ज़ब है कि दिल में तो रक्खी कुदूरत,[1]
करो मुँह पे हमसे सफ़ाई की बातें।

ज़फ़र

ग़ैर फिरता है लिये यूँ तेरे ख़त को कि अगर,
कोई पूंछे कि ये क्या है तो बताये न बने।

ग़ालिब

देखिये क्यों, कोई तुरबत होगी,
आपको मुफ़्त निदामत[2] होगी।

'सफ़ी' लखनवी

कहके ये फेर लिया मुँह मेरे अफ़साने से,
'फ़ायदा रोज़ कही बात के दुहराने से?'

'फ़हीम' गोरखपुरी

बैठना पास तुम्हें ग़ैर के क्या लाज़िम था,
तुमने इतना भी मियाँ पास[3] हमारा न किया।

मुसहफ़ी

सुनो तो अर्ज़ करें, मान लो तो क्या कहना,
तुम्हारे पास हम आये थे एक ज़रूरत से।

फ़िराक़

सुने जाते न थे तुमसे मेरे दिन-रात के शिकवे,
कफ़न सरकाओ मेरी बेज़बानी देखते जाओ।

फ़ानी

ग़ुंचए-नाशिगुफ़्ता[4] को दूर से मत दिखा कि यूँ,
बोसे को पूछता हूँ मैं, मुँह से मुझे बता कि यूँ।

ग़ालिब

१. द्वेष २. शर्मिन्दगी ३. ख़याल ४. बन्द कली

बैठे हैं तेरे दर पे कुछ करके उठेंगे,
या वस्ल ही हो जायेगा या मर के उठेंगे।

अज्ञात

तेरी महफ़िल से उठाता ग़ैर मुझको, क्या मजाल!
मैंने देखा था कि तूने भी इशारा कर दिया।

हसरत

बे[1] तुम्हारे मैं जी गयी अब तक,
तुमको क्या ख़ुद मुझे यक़ीन नहीं।

अज्ञात

सुनी एक भी बात तुमने न मेरी।
सुनीं मैंने सारे ज़माने की बातें।

अमीर

वफ़ा की हमने और तुमने जफ़ा की,
तुम अच्छे हम बुरे, क़ुदरत ख़ुदा की।

नाज़िम

माना कि हमसे आपको नफ़रत है, पर इसे
क्या कीजिये कि मुझको मुहब्बत है आपसे।

हरम

क्यों मेरी बूदो-बाश[2] की पुर्सिश है हर घड़ी,
तुम तो कहो, रहते हो दो-दो पहर कहाँ?

मीर मेहदी 'मजरूह'

रात उनको बात-बात पे सौ-सौ दिये जवाब,
मुझको ख़ुद अपनी ज़ात से ऐसा गुमाँ न था।

हाली

१. बिना २. रहन-सहन, रहाइश

दिल-जलों से दिल्लगी अच्छी नहीं।
रोने वालों से हँसी अच्छी नहीं।

रियाज़

आपका एतबार कौन करे,
रोज़ का इंतज़ार कौन करे।

दाग़

एक तुम कि वफ़ा तुमसे न होगी, न हुई है,
एक हम कि तक़ाज़ा न किया है, न करेंगे।

'हसरत' मोहानी

मज़ा आता अगर गुज़री हुई बातों का अफ़साना
कहीं से हम बयाँ करते, कहीं से तुम बयाँ करते।

वहशत

सच बता इसमें कोई बात भी है,
या यूँ ही मेह्रबान है प्यारे।

जिगर

शर्मिन्दा होंगे, जाने भी दो इम्तिहान को,
रक्खेगा तुमसे कौन अज़ीज़ अपनी जान को।

मीर

तुमसे कुछ हमने न देखा जुज़[1] जफ़ा,
पर वो क्या कुछ था कि जी को भा गया।

मीर 'दर्द'

जो कुछ चाहिये आप फ़रमाइये,
पर ग़ैरों की बातें न सुनवाइये।

बेदार

१. अलावा

जिसका तू आशना[1] हुआ होगा,
उसने क्या-क्या सितम सहा होगा।

सोज़

लाख पर्दे में छिपके तुम बैठो,
देख ही लेंगे देखने वाले।

नवाब आसिफ़ुद्दौला 'आसिफ़'

नै उन्स[2] के ख़्वाहाँ हैं, नै प्यार के भूके हैं,
हम लोग हैं बाज़ारी, दीदार[3] के भूके हैं।

मुसहफ़ी

परस्तिश[4] की याँ तक कि, ऐ बुत, तुझे,
नज़र में सभों की ख़ुदा कर चले।

मीर

तेरे इश्क़ की बन गयी हूँ कहानी,
कही जा रही हूँ सुनी जा रही हूँ।

अज्ञात

मलामत[5] की आखिर कोई हद भी है,
बस अब कुछ न कहिये बहुत हो गया।

फ़िराक़

मैंने जो कुछ भी किया बेजा किया,
आपने जो कुछ किया अच्छा किया।

शोख़

क़लक़[6] और दिल का सिवा हो गया,
दिलासा तुम्हारा बला हो गया।

हाली

१. परिचित, दोस्त २. प्रेम ३. दर्शन ४. पूजा ५. निन्दा
६. दुःख

तोड़कर अहदे-करम[1] ना-आशना[2] हो जाइये,
बंदापर्वर जाइये, अच्छा, ख़फ़ा हो जाइये।

हसरत

जबीं[3] पर सादगी, नीची निगाहें, बात में नर्मी,
मुख़ातिब कौन कर सकता है तुमको लफ़्ज़े-'क़ातिल' से।

जिगर

तुमने फेरी लाख नर्मी से नज़र,
दिल के आईने में बाल आ ही गया।

मुल्ला

होगा ग़ज़ब जो हश्र में झगड़ा हो जायेगा,
मानो कहा कि बात अभी घर की घर में है।

अज्ञात

मैंने कहा कि दिल से तुझे चाहता हूँ मैं',
उसने कहा कि 'मुझको तेरे दिल की क्या ख़बर।'

'फ़हीम' गोरखपुरी

ये फ़ित्ना[4] आदमी की ख़ाना-वीरानी[5] को क्या कम है,
हुए तुम दोस्त जिसके दुश्मन उसका आसमाँ क्यों हो।

ग़ालिब

---

१. मेहरबानी करने का वादा २. अपरिचित ३. माथा
४. उपद्रव ५. घर की तबाही

शोख़ी और शरारत

अलायमो-कनायात

किससे पैमाने-वफ़ा बाँध रही है बुलबुल,
कल न पहचान सकेगी गुले-तर की सूरत।

हाली

क़फ़स[1] में मुझसे रूदादे-चमन[2] कहते न डर हमदम,
गिरी है जिस पे कल बिजली वो मेरा आशियाँ क्यों हो।

ग़ालिब

नशेमन न जलता निशानी तो रहती,
हमारा था क्या ठीक रहते, न रहते।

'साक़िब' लखनवी

क़ैद में इतना ज़माना हो गया,
अब क़फ़स भी आशियाना हो गया।

'हफ़ीज़' जौनपूरी

दम बुलबुले-असीर[3] का तन से निकल गया,
झोंका नसीम का जुहीं[4] सन से निकल गया।

नासिख़

हम असीरों[5] को भला क्या काम है गुलशन से लेक[6]
जी निकल जाता है जब सुनते हैं बहार आयी है।

'मज़हर' जानेजानाँ

---

१. बन्दीगृह, पिंजरा २. चमन का हाल ३. पिंजरे में बन्द बुलबुल ४. ज्यों ही ५. क़ैदियों ६. लेकिन

कैसा चमन, कि हम-से असीरों को मना है
चाके-क़फ़स से बाग़ की दीवार देखना।

मीर

झगड़ा आबो-दाने[1] का है, दामो-क़फ़स[2] की बात नहीं,
अपने बस की बात नहीं, सय्याद[3] के बस की बात नहीं।

'हफ़ीज़' जालंधरी

गुलशन बहार पर था नशेमन बना लिया,
मैं क्यों हुआ असीर मेरा क्या क़सूर था ?

'साक़िब' लखनवी

पिन्हाँ[4] था दामे-सख़्त क़रीब आशियाने के,
उड़ने न पाये थे कि गिरफ़्तार हम हुए।

ग़ालिब

ये सितम क़ैदे-क़फ़स में सय्याद,
किसने पूछा था बहार आयी है।

'ताजवर' नजीबाबादी

तड़प के रह गयी बुलबुल क़फ़स में, ऐ सय्याद,
ये क्यों कहा कि अभी तक बहार बाक़ी है।

'बेताब' अज़ीमाबादी

हमने अपने आशियाने के लिए,
जो चुभें दिल में वही काँटे लिये।

वहीदुद्दीन 'वहीद'

कल तक यही गुलशन था, सय्याद भी, बिजली भी,
दुनिया ही बदल दी है तामीरे-नशेमन[5] ने।

फ़ानी

---

१. दाना-पानी, २. जाल और पिंजरा ३. चिड़िया पकड़ने-वाला ४. छुपा हुआ ५. घोंसला बनाना

इसी चमन में कि वुसअत[1] है जिसकी ला-महदूद,[2]
नहीं पनाह की जा[3] एक आशियाँ के लिए।

'आरज़ू' लखनवी

चार तिनके सही मगर सय्याद,
मेरी दुनिया थी आशियाने में।

'क़ैस' शेख़पुरी मुंगेरी

हम ऐसे बदनसीब कि अब तक न मर गये,
आँखों के आगे आग लगी आशियाने में

मिर्ज़ा यास यगाना चंगेज़ी

उस साल उजड़ा था फ़स्ले-गुल[4] में बनते-बनते
रहता तो आशियाँ को अब एक साल होता।

'आसी' आल्दनी

अब चमन में भी किसी सूरत से दिल लगता नहीं,
हाँ, मगर जब तक क़फ़स में थे, क़फ़स बदनाम था।

जगतमोहनलाल 'रवाँ'

और कुछ बातें करो, ऐ हमसफ़ीराने-चमन[5]
ये न पूछो क्यों क़फ़स में मुझको आराम आ गया।

अज्ञात

क़फ़स से छुट के वतन का सुराग़ भी न मिला,
वो रंगे-लालओ-गुल था कि बाग़ भी न मिला।

फ़िराक़

नाला[6] है बुलबुले-शोरीदा[7] तेरा ख़ाम[8] अभी
अपने सीने में ज़रा देर इसे थाम अभी।

इक़बाल

---

१. विस्तार २. अनन्त ३. जगह ४. फूलों का मौसम
५. चमन में साथ चहचहानेवाले ६. क्रंदन, फ़रियाद ७. मस्त बुलबुल ८. कच्चा

नशेमन फूंकने वाले हमारी ज़िंदगी क्या है,
कभी रोये, कभी सिज्दे किये ख़ाके-नशेमन पर।

'बेख़ुद' मोहानी

क्या बताऊँ किस क़दर ज़ंजीरे-पा साबित हुए,
चंद तिनके जिनको अपना आशियाँ समझा था मैं।

जिगर

चुने महीनों ही तिनके ग़रीब बुलबुल ने,
मगर नसीब न दो रोज़ आशियाना हुआ।

आतश

ख़ुदा किसी को ये ख़्वाबे-बद न दिखलाये,
क़फ़स के सामने जलता है आशियाँ अपना।

मिर्ज़ा यास यगाना चंगेज़ी

फ़स्ले-गुल जो याद आयी, आशियाँ भी याद आया,
फ़स्ले-गुल में उजड़ा था शायद आशियाँ अपना।

फ़ानी

बाग़बाँ काम हमें क्या है वो उजड़े कि रहे,
जब हमीं बाग़ से निकले तो नशेमन कैसा।

रियाज़

कुछ क़फ़स में इन दिनों लगता है जी,
आशियाँ अपना हुआ बरबाद क्या?

मोमिन

उस गिरफ़्तार की पूछो न तड़प, जिसके लिए,
दर क़फ़स का हो खुला, ताक़ते-परवाज़[1] न हो।

'जलील' मानकपुरी

---

१. उड़ने की ताक़त

यहाँ तक बाग़बाँ ने बाग़ सींचा ख़ूने-बुलबुल से,
कि आख़िर रंग बनकर फूट निकला चेहरए-गुल से।

अज्ञात

कुछ बालो-पर में ताक़त न रही, तब छूटे,
हम हुए ऐसे बुरे वक़्त में आज़ाद कि बस।

इनामुल्ला ख़ाँ 'यक़ीन'

असीर करके हमें क्यों रिहा किया, सय्याद,
वो हमसफ़ीर भी छूटे, वो बाग़ भी न मिला।

'शफ़क़' इमादपुरी

गर ज़मज़मा[1] यही है कोई दिन, तो हमसफ़ीर,
इस फ़स्ल ही में हमको गिरफ़्तार देखना।

मीर

आज कुछ मेहरबान है सय्याद,
क्या नशेमन भी हो गया बरबाद।

'असर' लखनवी

टुक तू फ़ुरसत दे कि रुख़सत हो लें, ऐ सय्याद हम,
मुद्दतों इस बाग़ के साये में थे आज़ाद हम।

'मज़हर' जानेजानाँ

ग़नीमत है क़फ़स फ़िक्रे-रिहाई क्या करें, हमदम,
नहीं मालूम अब कैसी हवा चलती है गुलशन में।

'साक़िब' लखनवी

उस मुर्ग़े-नातवाँ[2] की, सय्याद, कुछ ख़बर है,
जो छूटकर क़फ़स से गुलज़ार तक न पहुँचा।

सौदा

---

१. गीत, चहकना २. कमज़ोर पक्षी

कुछ क़फ़स की तीलियों से छन रहा है नूर-सा,
कुछ फ़िज़ा कुछ हसरते-परवाज़ की बातें करो।

फ़िराक़

ज़ोर ही क्या था, जफ़ाए-बाग़बाँ देखा किये,
आशियाँ उजड़ा किया, हम नातवाँ देखा किये।

'सफ़ी' लखनवी

नाला किया तो आतशे-गुल भी भड़क उठी,
बुलबुल ने आज आग लगा दी चमन के बीच।

अज्ञात

सुब्ह तक शमा सर को धुनती रही,
क्या पतंगे ने इल्तमास[1] किया।

मीर

दाग़े-फ़िराक़े-सोहबते-शब[2] की जली हुई,
एक शमा रह गयी है सो वो भी ख़मोश है।

ग़ालिब

सर शमा सा कटाइये पर दम न मारिये,
मंज़िल हज़ार दूर हो, हिम्मत न हारिये।

ज़ौक़

रुख़े-रोशन के आगे शमा रखकर वो ये कहते हैं,
उधर जाता है देखें या इधर पर्वाना आता है।

दाग़

मुझमें और शमा में होती थीं ये बातें शबे-हिज्र,[3]
आज की रात बचेंगे तो सहर[4] देखेंगे।

मीर 'फ़साहत'

---

१. प्रार्थना, फ़रियाद २. रात के मिलन की चिन्ता का दाग़
३. वियोग की रात ४. सुबह

फिर न देखा कुछ बजुज़[1] एक शोलए-पुरपेचो-ताब,[2]
शमा तक तो हमने देखा था कि पर्वाना गया।

मीर

मुझी को नाज़ से देखा जला जो पर्वाना,
तुम एक बज़्म में मर्दुमशनास[3] बैठे हो।

'तअश्शुक़' लखनवी

ज़माने की हवा बदली, निगाहे-आशना[4] बदली,
उठे महफ़िल से सब बेगानए-शमए-सहर[5] होकर।

मिर्ज़ा यास यगाना चंगेज़ी

शमा ने सर पे रक्खी आग क़सम खाने को,
बख़ुदा मैंने जलाया नहीं पर्वाने को।

पं० दयाशंकर 'नसीम'

सुब्ह तक वो भी न छोड़ी तूने, ऐ बादे-सबा,
यादगारे-रौनक़े-महफ़िल थी पर्वाने की ख़ाक।

'आसी' ग़ाज़ीपुरी

बाक़ी है अभी चार पहर रात का झगड़ा,
ऐ शमए-शबे-हिज्र मेरा साथ दिये जा।

'नूह' नारवी

फ़स्ले-गुल आयी या अजल[6] आयी, क्यों दरे-ज़िंदाँ[7] खुलता है,
या कोई क़ैदी और आ पहुँचा या कोई क़ैदी छूट गया।

फ़िराक़

ज़िंदाँ की हक़ीक़त ही क्या थी, ऐ हमदम, हिम्मत छूट गयी,
दिल बैठ गया, जी छूट गया, दीवानों की क़िस्मत फूट गयी।

फ़िराक़

---

१. अलावा २. लहराती हुई लपट ३. आदमी को पहचानने-वाले ४. पहचानी हुई निगाह ५. प्रात:काल की शमा से बेख़बर ६. मौत ७. क़ैदखाने का फाटक

रात महफ़िल में तेरे हुस्न के शोले के हुज़ूर,[1]
शमा के रुख़ पे जो देखा तो कहीं नूर न था।

मीर

चारा नहीं जलते रहने के सिवा,
साँचे में फ़ना[2] के ढलते रहने के सिवा।
ऐ शमा, तेरी हयाते-फ़ानी[3] क्या है,
झोंके खाने, सँभलते रहने के सिवा।

मिर्ज़ा यास यगाना चंगेज़ी

बैठ जाता हूँ जहाँ छाँव घनी होती है।
हाय, क्या चीज़ ग़रीबुलवतनी[4] होती है।

'हफ़ीज़' जौनपुरी

चलता हूँ थोड़ी दूर हर एक राह-रौ[5] के साथ,
पहचानता नहीं हूँ अभी राहबर[6] को मैं।

ग़ालिब

हज़ारों ख़िज्र[7] पैदा कर चुकी है नस्ल आदम की,
ये सब तस्लीम, लेकिन आदमी अब तक भटकता है।

फ़िराक़

सितारों के आगे जहाँ और भी हैं,
अभी इश्क़ के इम्तहाँ और भी हैं।

इक़बाल

कमर में बाँधे हुए चलने को याँ सब यार बैठे हैं,
बहुत आगे गये, बाक़ी जो हैं तैयार बैठे हैं।

इंशा

---

१. सामने २. विनाश ३. नश्वर जीवन ४. परदेस में रहना ५. राही ६. पथ-प्रदर्शक ७. एक अमर पैग़म्बर, पथ-प्रदर्शक

मौत एक माँदगी[1] का वक्फ़ा[2] है,
यानी आगे बढ़ेंगे दम लेकर।

मीर

न पूछ हाल मेरा, चोबे-खुश्के-सहरा[3] हूँ,
लगा के आग मुझे क़ाफ़िला रवाना हुआ।

आतश

ऐ रहरवाने-राहे-मुहब्बत बढ़े चलो,
इस रहगुज़र में सायए-दीवारो-दर नहीं।

फ़िराक़

कारवाँ थककर फ़िज़ा[4] के पेचो-खम में रह गया,
मेह्रो-माहो-मुश्तरी[5] को हम-इनाँ[6] समझा था मैं।

इक़बाल

ज़िन्दगी यूँ भी गुज़र ही जाती,
क्यों तेरा राहगुज़र याद आया।

ग़ालिब

मुझे सर पीटते देखा, चले तुम, सैर क्या देखी,
ज़रा गुलकारिए-दीवारे-ज़िंदाँ[7] देखते जाओ।

नासिरी

दिल तड़पे है, जान घुले है, हाय जिगर का क्या होगा,
मजनूँ मजनूँ लोग कहे हैं, मजनूँ क्या हम-सा होगा।

मीर

चमन में फ़सले-बहार आयी और गुज़र भी गयी,
मैं फ़िक्र ही में रहा आशियाँ बनाने के।

अज्ञात

---

१. बीमारी २. अवधि ३. निर्जन स्थान की सूखी लकड़ी ४. वायुमंडल ५. सूरज, चाँद और मंगलग्रह ६. साथ चलने वाला ७. कैदखाने की दीवार पर (मेरे लहू के छींटों से हुई) चित्रकारी

डरता हूँ आसमान से बिजली न गिर पड़े,
सय्याद की निगाह सूए-आशियाँ नहीं।

मोमिन

बच गया कल किसी हिकमत से नशेमन अपना,
आज की तुंद हवा देखिए क्या करती है।

'ज़फ़र' मुज़फ़्फ़रपुरी

कोई मेरे दिल से पूछे तेरे तीरे-नीमकश[1] को,
ये खलिश[2] कहाँ से होती जो जिगर के पार होता।

ग़ालिब

नाहक़ निशान बाँध के क़ातिल ठहर गया,
कह दो चलाए तीर, मेरा दिल ठहर गया।

सफ़ी

दिखाना पड़ेगा हमें ज़ख्मे-दिल,
अगर तीर उसका ख़ता हो गया।

हाली

खंजर भी उनके ज़ख्म-रसीदों[3] में मिल गया,
ये भी लहू लगा के शहीदों में मिल गया।

ज़ौक़

बुलबुल, चमन में तेग़े-निगह किसकी चल गयी,
जिस गुल को देखता हूँ सो ज़ख्मों से चूर है।

सौदा

नमक भरकर मेरे ज़ख्मों में क्या तुम मुस्कराते हो,
मेरे ज़ख्मों को देखो, मुस्कराना इसको कहते हैं।

'बेख़ुद' देहलवी

---

१. आधा खिंचा हुआ तीर २. कसक ३. घायलों

चली सिम्ते-ग़ैब[1] से इक हवा कि चमन सुरूर[2] का जल गया,
मगर एक शाखे-निहाले-ग़म[3] जिसे दिल कहें सो हरी रही।

'सिराज' औरंगाबादी

मेरा जी जलता है उस बुलबुले-बेकस की ग़ुरबत[4] पर,
कि जिसने आसरे पर गुल क छोड़ा आशियाँ अपना।

'मज़हर' जानेजानाँ

चमन से कोई बातें अपने जाने की सुनाता है,
कि गुल का एक रंग आता है और इक रंग जाता है।

'वाक़िफ़' देहलवी

रंगे-गुल व बूए-गुल होते हैं हवा दोनों,
क्या क़ाफ़िला जाता है जो तू भी चला चाहे।

मीर

क्या गिला सय्याद से हमको, यूँ ही गुज़रे है उम्र,
अब असीरे-दाम हैं तब थे गिरफ़्तारे-चमन।

सौदा

इस साल हमनफ़स मेरे आज़ाद हो गये,
मुझ पर मेहर्बाँ कभी सय्याद होवेगा।

'फ़ुग़ाँ' देहलवी

चमन में बाग़बाँ से सुब्ह को कहती थी ये बुलबुल,
गुलों के मुँह पे यूँ चढ़ती है, दीदा[5] देख शबनम का।

मीर 'दर्द'

तड़पती क्यों है, ऐ बुलबुल, कमाल इतना तो पैदा कर,
कि तेरा अश्क जिस जा गिर पड़े, गुलज़ार पैदा हो।

सोच

१. गुप्त दिशा २. मस्ती ३. ग़म के पेड़ की डाल
४. परदेश में होना ५. आँख, (यहाँ पर) ढिठाई ६. आँसू

फ़स्ले-गुल जाती है 'सौदा' देख ले नरगिस को टुक,
बाग़ में मेहमाँ कोई दिन है ये बीमारे-चमन।

सौदा

बालो-पर भी गये बहार के साथ,
अब तवक़्क़ो[1] नहीं रिहाई की।

मीर

उस गुल को भेजना है मुझे ख़त सबा के हाथ,
इस वास्ते लगा हूँ चमन की हवा के साथ।

'मज़हर' जानेजानाँ

एक हमीं ख़ार[2] थे आँखों में सभी के सो चले,
बुलबुलो, ख़ुश रहो अब तुम गुलो-गुलज़ार के साथ।

क़ायम

असीराने-क़फ़स की नाउमेदी पर नज़र कीजो,
बहार आवे तो, एसय्याद, मत मुझको ख़बर कीजो।

यक़ीन

नौ-गिरफ़्तारी के बाअस[3] मुज़्तरिब[4], सय्याद, हूँ,
लगते-लगते जी क़फ़स में भी मेरा लग जायेगा।

मीर 'हसन'

मुर्ग़ाने-तेज़-बाल[5] से शिकवा है यह कि हाय,
हमको असीरे-चंगुले-सय्याद कर गये।

मुसहफ़ी

बेरहम बाग़बाँ है और बेवफ़ा बहार,
बाँधा था हमने आके अबस[6] आशियाँ कहाँ।

ऐशी

१. आशा २. काँटा ३. कारण ४. बेचैन ५. तेज पंख-वाले पक्षी ६. व्यर्थ

नज़र लगे न कहीं तेरे दस्तो-बाज़ू[1] को,
ये लोग क्यों मेरे ज़ख़्मे-जिगर को देखते हैं।

ग़ालिब

कहे है ख़ंजरे-क़ातिल से ये गुलू[2] मेरा,
कमी जो मुझसे करे तो पिये लहू मेरा।

ज़ौक़

तुम्हारी याद के जब ज़ख़्म भरने लगते हैं,
किसी बहाने तुम्हें याद करने लगते हैं।

फ़ैज़

गले मिलने झुकी, झुककर रुकी, रुक कर खिंची क़ातिल,
तेरी शमशीर को भी नाज़े-माशूक़ाना आता है।

अमीर

मैं तो मैं ग़ैर को मरने से अब इन्कार नहीं,
एक क़यामत है तेरे हाथ में तलवार नहीं।

हाली

चली भी तेग़ तो किस नाज़ से, थम-थम के, रुक-रुक के,
ये कुछ उनसे भी बढ़कर नाज़नीं मालूम होती है।

रियाज़

मज़ा है अह्दे-जवानी में सर पटकने का,
लहू में फिर ये रवानी रहे रहे, न रहे।

चकबस्त

ले जाओ मेरे सीने से नावक[3] निकाल के,
पर दिल निकल न आये कहीं, देख-भाल के।

सैफ़ुलहक़ 'अदीब'

१. हाथ और भुजा २. गरदन ३. छोटा तीर

निकालूँ किस तरह सीने से अपने तीरे-जानाँ को,
न पैकाँ[1] दिल को छोड़े है, न दिल छोड़े है पैकाँ को।

ज़ौक़

गर्दन तने-बिस्मिल से जुदा हो गयी कब की,
गर्दन से जुदा ख़ंजरे-क़ातिल नहीं होता।

अमीर

किया तुमने क़त्ले-जहाँ एक नज़र में,
किसी ने न देखा तमाशा किसी का।

मोमिन

कुछ तमाशा है, खेल है, क्या है ?
एक ज़माने को क़त्ल कर बैठे।

मौलाबख़्श 'क़लक़'

आज वाँ तेग़ो-कफ़न बाँधे हुए जाता हूँ मैं,
उज़्र मेरे क़त्ल करने में वो अब लायेंगे क्या।

ग़ालिब

बाक़ी है लहू दिल में तो हर अश्क से पैदा,
रंगे-लबो-रुख़सारे-सनम करते रहेंगे।

फ़ैज़

ख़ूने-दिल ज़ाया[2] न हो, मुझको बस इतनी फ़िक्र है,
अपने काम आया तो क्या, ग़ैरों के काम आया तो क्या।

आनन्द नरायन 'मुल्ला'

हश्र में मेरा लहू छुपता तो आख़िर किस तरह,
आप भी भूले न थे, मुझको भी कुछ-कुछ याद था।

'साक़िब' लखनवी

१. तीर की नोक २. व्यर्थ

सय्याद की मर्ज़ी है कि अब गुल की हवस में,
नाले न करें मुर्ग़-गिरफ़्तार क़फ़स में ।

मीर 'हसन'

न फूलते हैं शुगूफ़े[1] न गुंचे खिलते हैं,
चमन में शोर पड़ा किसके मुस्कराने का ।

जोशिश

अब क़फ़स में होश आया तो ये हैरत है हमें,
किस तरह आँखों से लुटते आशियाँ देखा किये ।

जिगर

कम नहीं है दिल पर दाग़ भी ऐ मुर्ग़-असीर,
गुल में क्या है जो हुआ है तू तलबगारे-चमन ।

मीर

लुत्फ़े-बहार कुछ नहीं गो है वही बहार,
दिल क्या उजड़ गया कि ज़माना उजड़ गया ।

'आरज़ू' लखनवी

बहारे-गुल क्या है उसको फूँको, चमन में चलकर ये सैर देखो,
कि शमए-रुख़सार[2] पर तुम्हारे जलेगी बुलबुल पतंग होकर ।

दाग़

१. फूल २. दीपक रूपी गाल

कहाँ मैख़ाने का दरवाज़ा 'ग़ालिब' और कहाँ वाइज़,
पर इतना जानते हैं कल वो जाता था कि हम निकले ।

मधुशाला

सागरो मीना

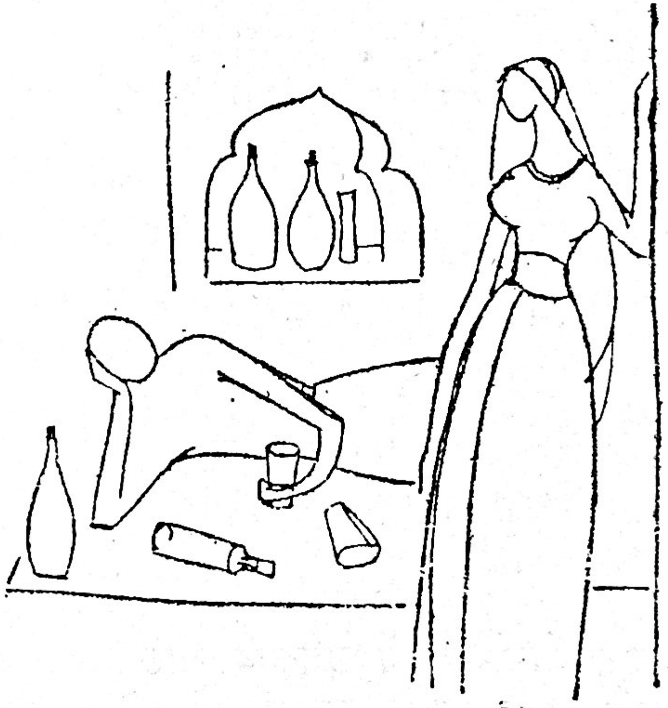

पीने वाले एक ही दो हों तो हों,
मुफ़्त सारा मैकदा बदनाम है।

जिगर

अब तो जाते हैं मैकदे से 'मीर',
फिर मिलेंगे अगर ख़ुदा लाया।

मीर

दूर से आये थे, साक़ी, सुनके मैख़ाने को हम,
पर तरसते ही रहे हैं एक पैमाने को हम।

'नज़ीर' अकबराबादी

ख़ुद गिरे लेकिन छलकने दी न मै,
अपने सर ले लीं बनाएँ जाम की।

औज

भर-भर के जाम बज़्म में छलकाये जाते हैं,
हम उनमें हैं जो दूर से तरसाये जाते हैं।

रियाज़

रिंद[1] जो ख़िश्त[2] उठा लें वही कूज़ा[3] बन जाये,
जिस जगह बैठ के पी लें वही मैख़ाना बने।

'असग़र' गोंडवी

शराब बंद हो, साक़ी के बस की बात नहीं,
तमाम शह्र है, दो-चार-दस की बात नहीं।

'असद' मुलतानी

जब मैकदा छुटा तो फिर अब क्या जगह की क़ैद,
मस्जिद हो, मद्रसा हो, कोई ख़ानक़ाह हो।

ग़ालिब

अब्र उठा था काबे से और झूम पड़ा मैख़ाने पर,
वादाकशों का झुरमुट हैगा शीशे और पैमाने पर।

मीर

ये बज़्मे-मै है याँ कोताह-दस्ती[4] में है महरूमी,[5]
जो बढ़कर ख़ुद उठा ले हाथ में मीना उसी का है।

शाद

हाथ से किसने साग़र पटका मौसम की बेकैफ़ी[6] पर,
इतना बरसा टूट के बादल डूब चला मैख़ाना भी।

'आरज़ू' लखनवी

किरन सूरज की निकली जामे-मै से,
ये कैसी धूप निकली चाँदनी में।

रियाज़

सल्तनत पर नहीं है कुछ मौक़ूफ़,[7]
जिसके हाथ आये जाम वो जम है।

मीर 'दर्द'

---

१. शराबी २. ईंट ३. मिट्टी का प्याला ४. हाथ खींचना
५. वंचित रहना ६. नीरसता, फीकापन, ७. निर्भर

ख़ानक़ाहों से है पोशीदा तअल्लुक़ जिनका,
रास्ते ऐसे गये हैं कई मैख़ाने को।

अज्ञात

मुझे पीने दे, पीने दे कि तेरे जामे-लालीं[1] में,
अभी कुछ और है, कुछ और है, कुछ और है साक़ी।

मजाज़

तुझको मस्जिद है मुझको मैख़ाना,
वाइज़ा,[2] अपनी-अपनी क़िस्मत है।

मीर

ऐ ज़ौक़, देख दुख़्तरे-रज़[3] को न मुँह लगा,
छुटती नहीं है मुँह से ये काफ़िर लगी हुई।

ज़ौक़

वाइज़, न तुम पियो न किसी को पिला सको,
क्या बात है तुम्हारी शराबे-तहूर[4] की।

ग़ालिब

सद-साला[5] दौरे-चर्ख़[6] था साग़र का एक जाम,
निकले जो मैकदे से तो दुनिया बदल गयी।

'गुस्ताख़' रामपुरी

किधर से बर्क़[7] चमकती है देख ले, वाइज़,
इधर मैं जाम उठाता हूँ, तू किताब उठा।

जिगर

आये थे हँसते-खेलते मैख़ाने में 'फ़िराक़',
जब पी चुके शराब तो संजीदा हो गये।

फ़िराक़

---

१. लाल के रंग वाला जाम २. उपदेशक ३. अंगूर की बेटी
४. जन्नत की शराब ५. सौ वर्ष का ६, आसमान का चक्कर
७. बिजली

मुद्दत गुज़री हैं शग़्ले-मैकशी छूटे हुए,
वो पड़े हैं ताक़ पर जामो-सुबू टूटे हुए।

अज्ञात

मगर उसको फ़रेबे-नरगिसे-मस्ताना आता है,
उलटती हैं सफ़ें, गर्दिश में जब पैमाना आता है।

आतश

बेकैफ़ियों के कैफ़[1] से घबरा के पी गया,
तौबः के हर ख़याल को ठुकरा के पी गया।

जिगर

ये कम नहीं है बुढ़ापे में हमने तौबः की,
तमाम उम्र में हमने ये एक काम किया।

रियाज़

साक़िया अक्स पड़ा है जो तेरी आँखों का,
और दो जाम नज़र आते हैं पैमाने में।

'बासित' निस्वानी

आख़िरी जाम में क्या बात थी ऐसी साक़ी,
हो गया पी के जो ख़ामोश, वो ख़ामोश रहा।

'शाद' अज़ीमाबादी

गो हाथ को जुम्बिश नहीं आँखों में तो दम है,
रहने दो अभी साग़रो-मीना मेरे आगे।

ग़ालिब

फ़ुग़ाँ मुझ मस्त बिन फिर ख़ंदए-क़ुलक़ुल[2] न होएगा,
मए-गुलगूँ[3] का शीशा हिचकियाँ ले-लेके रोयेगा।

मीर

---

१. आनन्द २. सुराही से शराब उँडेलते समय निकलने वाली आवाज़ जो हँसी की तरह लगती है ३. फूल जैसी शराब

जामे-मै तौबः-शिकन,[1] तौबः मेरी जाम-शिकन,
सामने ढेर हैं टूटे हुए पैमानों के ।

रियाज़

अंगूर में यही थीं पानी की चार बूँदें,
पर जब से खिंच गयी हैं तलवार हो गयी हैं ।

'अमीर' मीनाई

तर-दामनी[2] पे शैख़ हमारी न जाइयो,
दामन निचोड़ दें तो फ़रिश्ते वज़ू करें ।

मीर 'दर्द'

उस महफ़िले-कैफ़ो-मस्ता में, उस अंजुमने-इर्फ़ाना[3] में,
सब जाम-बकफ़[4] बैठे ही रहे हम पी भी गये छलका भी गये ।

मजाज़

लोग कहते हैं रात बीत चुकी,
मुझको समझाओ, मैं शराबी हूँ ।

'साग़र' सिद्दीक़ी

ज़ाहिद,[5] शराबे-नाब[6] की तासीर कुछ न पूछ,
अकसीर है जो हलक़ से नीचे उतर गयी ।

दाग़

मै से ग़रज़ निशात[7] है किस रू-सियाह[8] को,
एक गूना[9] बेख़ुदी हमें दिन-रात चाहिये ।

ग़ालिब

बड़ी एहतियात-तलब[10] है वो जो शराब साग़रे-दिल में है,
जो छलक गयी तो छलक गयी, जो भरी रही तो भरी रही ।

बेनज़ीर शाह

---

१. तौबः को तोड़ने वाला २. दामन तर होना ३. ज्ञानियों की सभा ४. हाथ में जाम लिये हुए ५. विरक्त, विषय-भोग से दूर रहने वाला ६. पवित्र शराब ७. मस्ती ८. कलमुँहे ९. थोड़ी-सी १०. जिसमें बहुत सावधान रहना पड़े

साक़िया, तश्नगी[1] की ताब नहीं,
ज़हर दे दे अगर शराब नहीं ।

दाग़

यूँ तो पीता नहीं, पी लेता हूँ गाहे-गाहे,
वो भी थोड़ी-सी मज़ा मुँह का बदलने के लिए ।

जलाल

हंगामा है क्यों बरपा थोड़ी-सी जो पी ली है,
डाका तो नहीं डाला, चोरी तो नहीं की है ।

'अकबर' इलाहाबादी

'ग़ालिब' छुटी शराब पर अब भी कभी-कभी,
पीता हूँ रोज़े-अब्रो[2]-शबे-माहताब[3] में ।

ग़ालिब

'रियाज़' इसको न पूछो वक़्त से इसका तअल्लुक़ है,
कभी पी छुपके ख़ल्वत[4] में कभी पी खुल के महफ़िल में ।

रियाज़

साक़ी गयी बहार, रही दिल में ये हवस,
तू मिन्नतों से जाम दे और मैं कहूँ कि बस ।

सौदा

साक़िया, याँ लग रहा है चल-चलाव,
जब तलक बस चल सके, साग़र चले ।

दर्द

छलकती है जो तेरे जाम से उस मै का क्या कहना,
तेरे शादाब[5] होंटों की मगर कुछ और है साक़ी ।

मजाज़

---

१. प्यास २. बदली के दिन ३. चाँदनी रात ४. एकांत ५. रसीले

ले जाम, लबालब भर देना, फिर साक़ी को कुछ ध्यान नहीं,
ये साग़र पहुँचे दोस्त तलक, या हाथ लपक ले दुश्मन का।

'नज़ीर' अकबराबादी

देखा किये वो मस्त निगाहों से बार-बार,
जब तक शराब आये, कई दौर हो गये।

'शाद' अज़ीमाबादी

शीशए-मै की तरह, ऐ साक़ी,
छेड़ मत हमको, भरे बैठे हैं।

मुसहफ़ी

गर्चे मै पीने से की तौब: है मैंने,
भूल जाता हूँ वले[1] तेरी मुलाक़ात के वक़्त।

इंशा

पिला दे ओक से साक़ी, जो मुझसे नफ़रत है,
पियाला गर नहीं देता न दे, शराब तो दे।

ग़ालिब

ये हालत हो गयी है एक साक़ी के न होने से,
कि ख़ुम[2] के ख़ुम भरे हैं मै से और मैख़ाना ख़ाली है।

जौहर

'रासिख़' की फ़ाक़ामस्ती से अल्लाह की पनाह,
खाता है सूखे टुकड़े भिगो कर शराब में।

रासिख़

हम जानते हैं लुत्फ़े-तक़ाज़ाए-मैफ़रोश,[3]
वो नक़्द में कहाँ जो मज़ा है उधार में।

रियाज़

---

१. लेकिन २. मटका ३. शराब बेचने वाले के तकाज़े का मज़ा

साक़ी, इधर तो देख कि हम देर-मस्त[1] हैं,
कुछ मस्तिए-निगह भी मिला दे शराब में।

इस्माईल मेरठी

मैकशो, मै की कमी-बेशी पे नाहक़ जोश है,
ये तो साक़ी जानता है किसको कितना होश है।

अज्ञात

पहले ही साग़र में थे, हम तो पड़े लोटते,
इतने में साक़ी ने दी, उससे कड़ी और भी।

'नज़ीर' अकबराबादी

ये रंगे-बहारे-आलम है, क्या फ़िक्र है तुझको, ऐ साक़ी,
महफ़िल तो तेरी सूनी न हुई, कुछ उठ भी गये कुछ आ भी गये।

मजाज़

कहते हुए साक़ी से हया आती है वर्ना,
है यूँ कि मुझे दुर्दे-तहे-जाम[2] बहुत है।

ग़ालिब

तौब: से तो मेरी बोतल अच्छी,
जब टूटी है जाम हो गयी है।

रियाज़

मुहतसिब[3] संगे-जफ़ा से तेरे, मैख़ाने में
कौन-सा दिल था कि शीशे की तरह चूरन था।

मीर 'दर्द'

आँख भर आती है अकसर पिछले शब को, ऐ 'फ़िराक़'
वो ख़ुमारी[4] चश्मे-साक़ी वो भरे साग़र कहाँ।

फ़िराक़

---

१. जिसे देर में नशा चढ़ता हो २. जाम के नीचे की तलछट
३. शराब पीने से रोकने वाला ४. नशीली

कर्ज़ की पीते थे मै, और समझते थे कि हाँ,
रंग लायेगी हमारी फ़ाक़ामस्ती एक दिन ।

ग़ालिब

साक़ी ने भरके जाम दिये सबको बज़्म में,
साग़र जो हमने माँगा, तो शीशा हिला दिया ।

'नज़ीर' अकबराबादी

अँगड़ाई सी लेती नज़र आयी है ये दुनिया,
साक़ी, तेरे मैख़ाने में जब सुब्ह हुई है ।

फ़िराक़

हर शब शबे-बरात है, हर रोज़ रोज़े-ईद,
सोता हूँ हाथ गर्दने-मीना में डाल के ।

आतश

आदत-सी है, नशा है न अब कैफ़,
पानी न पिया, शराब पी ली है ।

रियाज़

कुछ ज़ह्र न थी शराबे-अंगूर,
क्या चीज़ है हराम हो गयी है ।

'अमीर' मीनाई

ज़ाहिद शराब पीने से काफ़िर हुआ हूँ मैं,
क्या डेढ़ चुल्लू पानी में ईमान बह गया है ।

ज़ौक़

अभी रहने दे कुछ दिन लुत्फ़े-नग़्मा[1] मस्तिए-सहबा[2],
अभी ये साज़ रहने दे, अभी ये जाम रहने दे ।

मजाज़

१. संगीत का आनन्द २. शराब की मस्ती

लुत्फ़े-मै तुझसे क्या कहूँ, ज़ाहिद,
हाय कमबख़्त, तूने पी ही नहीं ।

दाग़

पी के हम तुम जो चले झूमते मैख़ाने से,
झुक के क्या बात कही शीशे ने पैमाने से ।

अज्ञात

साक़ीगरी की शर्म करो वर्ना हम,
हर शब पिया ही करते हैं मै जिस क़दर मिले ।

ग़ालिब

आपकी मख़मूर[1] आँखों की कसम,
मेरी मैख़्वारी[2] अभी तक राज़ है ।

मजाज़

मै भी है, मीना भी है, साग़र भी है, साक़ी नहीं,
जी में आता है लगा दें आग मैख़ाने को हम ।

'नज़ीर अकबराबादी

मुहतसिब की ख़ैर, ऊँचा है उसी के फ़ैज़ से
रिंद का, साक़ी का, मै का, ख़ुम का, पैमाने का नाम ।

फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'

मुहतसिब गर्चे दिल-आज़ार[3] है मैख़्वारों का,
दीजे एक जाम, तो है यार अभी यारों का ।

ज़ौक़

मालूम है सेराबिए-सरचश्मए-हैवाँ,[4]
बस तश्नालबी,[5] तश्नालबी, तश्नालबी है ।

फ़िराक़

१. नशीली २. शराब पीना ३. दिल दुखाने वाला
४. प्राणियों के मूल स्रोत का सिंचा हुआ होना ५. होंटों की प्यास

ऐ मुहतसिब, न फेंक ! मेरे मुहतसिब न फेंक !
ज़ालिम, शराब है, अरे ज़ालिम, शराब है !

ज़ौक़

हमने बरसात के मौसम में जो चाही तौबः,
अब इस ज़ोर से गरजा कि इलाही तौबः।

अज्ञात

बड़े पाक-तीनत,[1] बड़े साफ़-बातिन,[2]
'रियाज़' आपको कुछ हमीं जानते हैं।

रियाज़

मेरी तौबः भी कोई तौबः है,
जब बहार आयी है तोड़ डाली है।

जलील

करवटें लेती है फूलों में शराब,
हमसे इस वक़्त में तौबः होगी ?

अली अख़्तर

तसव्वुर[3] अर्श[4] पर है और सर है पाए-साक़ी पर,
ग़रज़ कुछ और ही धुन में यहाँ मैख़्वार बैठे हैं।

इंशा

भड़कती जा रही है दम-बदम इक आग-सी दिल में,
ये कैसे जाम हैं साक़ी, ये कैसा दौर है साक़ी।

मजाज़

कुछ रंग-सा फ़िज़ा[5] से टपकता है, ऐ जुनूँ,
चिटका हुआ है शीशए-अब्रे-बहार[6] क्या।

फ़िराक़

---

१. शुद्ध स्वभाव वाले २. साफ़ दिल वाले ३. कल्पना ४. आकाश ५. वातावरण ६. वसंत के बादलों की शराब की बोतल

नज़र मिलाके नज़र से जो दे दिया साक़ी
इस एक जाम पे क़ुरबान लाख मैख़ाने।

राजकुमारी सूर्यकला सहाय 'सर्वर'

लड़खड़ा कर जो गिरा पाँव पे साक़ी के गिरा,
अपनी मस्ती के तसद्दुक़[1] कि मुझे होश रहा।

'शाद' अज़ीमाबादी

मै की, मैख़ाने की, ख़ुम की, जाम की, मीना की ख़ैर !
मस्त आँखों का तसद्दुक़ एक पैमाना हमें।

जलील

औरों को पिला जाम से बस मुझको तो साक़ी,
एक घूँट बस उसका कि जो आँखों में खिंची है।

फ़िराक़

वो आ रहा है असा[2] टेकता हुआ नासेह,[3]
बहा दे इतनी कि, साक़ी, कहीं न थाह मिले।

रियाज़

आज साक़ी देख तो क्या है अजब रंगीं हवा,
सुर्ख़ मै, काली घटा और सब्ज़ है मीना का रंग।

'बेदार' देहलवी

इस मैकदे में 'सौदा' हम तो कभी न बहके,
सब मस्तो-बेख़बर थे, हुशियार था सो मैं था।

सौदा

उठ चले शैख़ जी तुम मजलिसे-रिंदाँ[4] से शताब,[5]
हमसे कुछ ख़ूब मदारात[6] न होने पायी।

मीर 'दर्द'

---

१. अनुकम्पा २. लाठी ३. नसीहत करने वाला ४. शराबियों की महफ़िल ५. जल्दी ६. आवभगत

छलकी पड़ती है मए-नाब, रिसे जासे जाते हैं हाथ,
ख़ैर साक़ी तेरे चटके हुए पैमाने की ।

फ़िराक़

अपनी भूठी जो कभी मुझको पिला देता है,
लबे-साग़र लबे-साक़ी का मज़ा देता है ।

रियाज

न देखा जो कुछ जाम में जम ने अपने,
सो इक क़तरए-मै में हम देखते हैं ।

सौदा

साक़ी मेरे भी दिल की तरफ़ टुक निगाह कर,
लब-तश्ना[1] तेरी बज़्म में ये जाम रह गया ।

मीर 'दर्द'

मैं अदा उसकी कहूँ क्या मेरे मैनोश[2] ने रात,
सर पे साक़ी के किस अंदाज़ से साग़र मारा ।

मुसहफ़ी

गर यार मै पिलाये तो फिर क्यों न पीजिये,
ज़ाहिद नहीं मैं, शैख़ नहीं, कुछ वली[3] नहीं ।

इंशा

देवे साक़ी जिसे इक जाम वो दावे से कहे,
आज जो पास है मेरे, नहीं जमशेद के पास ।

ज़ौक़

हर चंद हो मुशाहिदए-हक़[4] की गुफ़्तगू,
बनती नहीं है बादओ-साग़र[5] कहे बग़ैर ।

ग़ालिब

---

१. जिसके होंट प्यासे हों २. शराबी ३. महात्मा
४. सत्य के दर्शन ५. शराब और जाम

कभी ख़ुश भी किया है दिल किसी रिंदे-शराबी का,
भिड़ा दे मुँह से मुँह साक़ी हमारा और गुलाबी का ।

मीर 'दर्द'

जिगर की आग बुझे जिससे, जल्द वो शै[1] ला,
लगा के बर्फ़ में साक़ी सुराहिए-मै ला ।

इंशा

ये नहीं शीशए-मै, है किसी मैख़्वार का दिल,
मुहतसिब देख, न कर दिलशिकनी[2], ख़ूब नहीं ।

ज़ौक़

मैं और बज़्मे-मै से यूँ तश्ना-काम[3] आऊँ,
गर मैंने की थी तौब:, साक़ी को क्या हुआ था ।

ग़ालिब

वो बेहिजाब[4] जो कल पीके याँ शराब आया,
अगर्चे मस्त था मैं, पर मुझे हिजाब आया ।

ज़फ़र

कोई ये साक़िए-मजलिस से कह दो, आये इधर,
कभी हमारे हिस्से में दौर साग़र का ।

मुसहफ़ी

साक़ी है यक तबस्सुमे-गुल[5] मौसमे-बहार,
ज़ालिम भरे है जाम तो जल्दी से भर कहीं ।

सौदा

मर के भी छूटे न साक़ी के क़दम,
आज तक ख़ाके-दरे-मैख़ाना हूँ ।

तस्लीम

---

१. चीज़ २. दिल तोड़ना ३. असफल-मनोरथ, प्यासा
४. बेझिझक ५. फूल की एक मुस्कान

मै वो क्यों बहुत पीते बज़्मे-ग़ैर में यारब,
आज ही हुआ मंज़ूर उनको इम्तहाँ अपना।

ग़ालिब

हमें साग़रो-बादा के देने में अब करे देर जो साक़ी तो हाय ग़ज़ब,
कि ये अहदे-निशात[1] ये दौरे-तरब[2] न रहेगा जहाँ में सदा, न रहा।

ज़फ़र

ज़िक्रे-शराबो-हूर कलामे-ख़ुदा में देख,
'मोमिन' मैं क्या कहूँ मुझे क्या याद आ गया।

मोमिन

साक़ी बग़ैर शब जो पिया आबे-आतशीं,
शोला तो बन के मेरे दहन[3] से निकल गया।

नासिख़

कब टूटती है तौबः हमारी शराब से,
लेकिन है डर तेरी निगहे-नीमबाज़[4] से,

'रश्की' देहलवी

ख़बर क्या किसने शैख़ो-बिरहमन में झगड़े डाले हैं।
मगर सब बज़्मे-रिंदाँ हैं तुम्हारा नाम लेते हैं।

जलाल

क्या मैकदों में है कि मदारिस[5] में वो नहीं,
अलबत्ता एक वाँ दिले-बेमुद्दआ[6] न था।

शेफ़्ता

जनाबे-शैख़ ने जब पी तो मुँह बना के कहा,
'मज़ा भी तल्ख़[7] है, कुछ बू भी ख़ुशगवार नहीं।'

रियाज़

---

१. ख़ुशी के दिन २. मस्ती का ज़माना ३. मुंह ४. अधखुली आँख ५. मदरसे का बहुवचन ६. निष्काम हृदय ७. कड़वा

जो बात मैकदे में है इक-इक ज़बान पर,
अफ़सोस, मद्रसे में है बिल्कुल निहाँ हनोज़[1]।

शेफ़्ता

हज़ार बार पिलायी है, और हमीं से शैख़
हरम[2] में बैठ के लेता है पारसाई की।

तस्लीम

रूह किस मस्त की प्यासी गयी मैख़ाने से,
मै उड़ी जाती है साक़ी तेरे पैमाने से।

दाग़

क्यों न टूटे मेरी तौबः जो कहे तू साक़ी,
'पी ले, पी ले, अरे घनघोर घटा छायी है।'

रियाज़

ज़ाहिद को रिंद उभार के लाये हैं राह पर,
कुछ-कुछ मगर करामाते-पीरे-मुग़ाँ[3] भी है।

जलाल

तमन्ना है साक़ी, कभी बज़्मे-मै में
वो सरशार[4] हो और हुशियार मैं हूँ।

नासिख़

रात पी ज़मज़म[5] पे मै और सुब्हदम
धोये धब्बे जामए-अहराम[6] के।

ग़ालिब

साक़िए-बज़्मे-ग़ैर आप बने,
हमको ख़ूने-जिगर पिये ही बनी।

रश्की

---

१. अभी तक २. मस्जिद ३. मदिरालय के बूढ़े प्रबन्धक की कृपा ४. नशे में मस्त ५. मक्के के पवित्र कुएँ का पानी ६. हज के समय पहना जाने वाला कपड़ा

क़ुसूर क्या तेरा साक़ी, फ़लक[1] न देख सका,
गिराया हाथ से, लब तक जो मेरे जाम आया।

रिंद

शौक़े-मैं ने कर दिया इस दर्जा मुझको बदहवास,
मुहतसिब से राह पूछी खानए-खुम्मार[2] की ।

रियाज़

बज़्मे-साक़ी आ गयी है याद किस मैनोश[3] को,
जाम छलका, शीशए-मैं हिचकियाँ लेने लगा।

तस्लीम

जाँफ़िज़ा[4] है बादा,[5] जिसके हाथ में जाम आ गया,
सब लकीरें हाथ की गोया रगे-जाँ[6] हो गयीं।

ग़ालिब

साक़ी की बेमदद न बनी बात रात को,
मुतरिब[7] अगर्चे काम में अपने यगाना[8] था।

शेफ़्ता

कभी तो सुलह भी हो जाये रिंदो-मस्ती में
इलाही, शेख भी मैख्वार हो मुग़ाँ[9] की तरह।

दाग़

हुआ जो खाक बदन, साग़रे-शराब बना,
हज़ार शुक्र कि ज़र्रे से आफ़्ताब बना।

'असीर' लखनवी

मुझको भी इन्तज़ार था अब्र आये तो पियूँ,
साक़ी, अगर ये सच है कि बादल उठा, तो ला।

रियाज़

---

१. आसमान २. शराबखाना ३. शराब पीने वाला ४. उम्र बढ़ाने वाला ५. शराब ६. प्राणों वाली नस ७. गवैया ८. अद्वितीय ९. शराब पिलाने वाला

वो मस्त होश में आने का क़स्द[1] करता है,
पुकारता है ये साक़ी कि होशियार हूँ मैं।

'अमीर' मीनाई

आयी जो आज काम में सहबाए-तुन्दो-तल्ख,[2]
साक़ी ने खूब राज़ कहे बारे-आम में।

शेफ़्ता

न रहा होश, बेखुदी ही तो है,
साक़िया, शग़्ले-मैकशी ही तो है।

रिंद

रिंदाने-बेरिया[3] की है सोहबत किसे नसीब,
ज़ाहिद भी हम में बैठ के इन्सान हो गया।

दाग़

गिरा जो हाथ से जाम, इख्तियार क्या साक़ी,
तुझे मलाल, मुझे इनफ़आल[4] होना था।

'असीर' लखनवी

खास जो लोग हैं उन्हें खास अदा से जाम दे,
फेर के मुँह बढ़ा के हाथ साग़रे-लालाफ़ाम दे।

अज्ञात

रात के वक़्त मैं पिये साथ रक़ीब को लिये,
आये वो याँ खुदा करे, पे न करे खुदा कि यूँ।

ग़ालिब

इक जाम आखिरी तो पीना है और साक़ी,
अब दस्ते-शौक़ काँपे या पाँव लड़खड़ायें।

जिगर

---

१. इरादा २. कड़वी और तेज़ शराब ३. जिन शराबियों के दिल में मक्कारी न हो ४. शर्मिन्दगी

बूए-मै पा के मैं चलता हुआ मैख़ाने को,
इक परी थी कि लगा ले गयी दीवाने को।

जलील

ज़ाहिद उमीदे-रहमते-हक़[१] और हज्वे-मै,[२]
पहले शराब पी के गुनहगार भी तो हो।

'अमीर' मीनाई

और ले आये बाज़ार से, अगर टूट गया
साग़रे-जम से मेरा जामे-सिफ़ाल[३] अच्छा है।

ग़ालिब

गर यही है हुजूमे-अब्रे-सियाह,[४]
गर कोई मै पिये बईद[५] नहीं।

शेफ़्ता

मस्ती में कोई राज़ जो 'आसी' से फ़ाश हो,
माज़ूर[६] है अभी कि नया बादाख़्वार है।

आसी

थे जो साक़ी के नाज़ तौबः-शिकन,
रात 'रश्की' को भी पिये ही बनी।

रश्की

की तर्के-मै तो मायले-पिंदार[७] हो गया,
मैं तौबः करके और गुनहगार हो गया।

दाग़

आज साक़ी में नहीं गोकि मुरव्वत बाक़ी,
ख़ैर जिंदा है अगर यार तो सोहबत बाक़ी।

'असीर' लखनवी

---

१. ईश्वर की कृपा की आशा २. शराब की निंदा ३. मिट्टी का प्याला ४. काले बादलों की भीड़ ५. अनहोनी बात ६. लाचार ७. कल्पना की ओर झुकना

मैख़्वार की निगाह ने हंगामे-मैकशी,[१]
निश्तर चुभो दिया रगे-अब्रे-बहार[२] में।

दा

शीशा हाथ आया न हमने कोई साग़र पाया,
साक़िया, ले तेरी महफ़िल से चले, भर पाया।

'असीर' लखनवी

कहीं साग़र लबालब है, कहीं ख़ाली पियाले हैं,
ये कैसा दौर है साक़ी, ये क्या तक़सीम है साक़ी।

'कैफ़ी' आजमी

गर न था तू शरीके-महफ़िल क़ुसूर तेरा है या कि मेरा,
मेरा तरीक़ा नहीं कि रख लूँ किसी की ख़ातिर मए-शबाना[३]।

इक़बाल

कोई ऐसी भी है सूरत तेरे सदक़े[४] साक़ी,
रख लूँ मैं दिल में उठाकर तेरे मैख़ाने को।

जलील

चश्मे-साक़ी, कि थी कभी मख़मूर,
ख़ुद वही आख़िर शराब हो के रही।

फ़ानी

तूने रख दी थी जहाँ छीन के हमसे बोतल,
रूहे-मस्ती उसी जानिब[५] निगराँ है[६] साक़ी।

'हसरत' मोहानी

मैकशो, मुज़्दा[७] कि बाक़ी न रही क़ैदे-मकाँ,[८]
आज इक मौज बहा ले गयी मैख़ाने को।

जिगर

---

१. शराब पीते समय २. वसंत के बादल की नस ३. रात की बची हुई शराब ४. न्योछावर, (यहाँ पर) तेरी बदौलत ५. तरफ़ ६. देख रही है ७. मुबारक हो ८. जगह की क़ैद

न ये शीशा, न ये सागर, न ये पैमाना बने,
जाने-मैखाना तेरी नरगिसे-मस्ताना[1] बने।

'असग़र' गोंडवी

ये सुनके निस्फ़ शब[2] को दरे-मैकदा खुला,
माँगी है एक बुज़ुर्ग-तहज्जुदगुज़ार[3] ने।

रियाज़

बात साक़ी की न टाली जायेगी,
करके तौब: तोड़ डाली जायेगी।

जलील

एक चुल्लू में बहुत 'दाग़' बहक उठते थे,
आज सुनते हैं निकाले गये मैख़ाने से।

दाग़

आज पी हो तो, साक़ी, हराम शै पी हो,
ये शब की पी हुई मै का ख़ुमार बाक़ी है।

अज्ञात

ये मसायले-तसव्वुफ़,[4] ये तेरा बयान 'ग़ालिब',
तुझे हम वली समझते जो न बादाख़्वार होता।

ग़ालिब

१. मस्त आँख २. आधी रात ३. नमाज़ी बुज़ुर्ग; 'तहज्जुद' आधी रात के बाद की नमाज़ को कहते हैं ४. आध्यात्मिक उलझनें

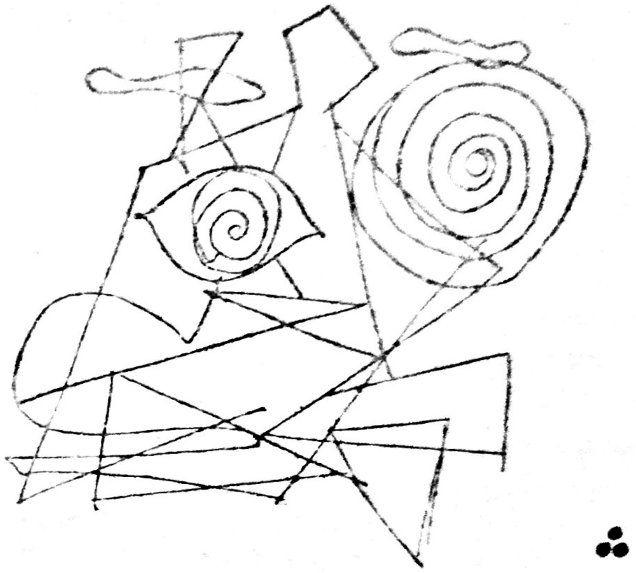

न था कुछ तो ख़ुदा था, कुछ न होता तो ख़ुदा होता,
मिटाया मुझको होने ने, न होता मैं तो क्या होता।

ग़ालिब

नैतिक और आध्यात्मिक कविता

तसव्वुफ़ और अख़लाक़ियात